THE FIRST CHRISTIAN MISSIONARY TO EUROPE.

पावल प्रेरित की कथा।



PUBLISHED BY THE
CHRISTIAN LITERATURE SOCIETY,
ALLAHABAD.

PRINTED AT THE MISSION PRESS.

1st *Ed*. 1,000.] *Price* 2 *annas*. [दाम २ आना।

1892.

पितृपुत्रपवित्रात्मनेनमः ।

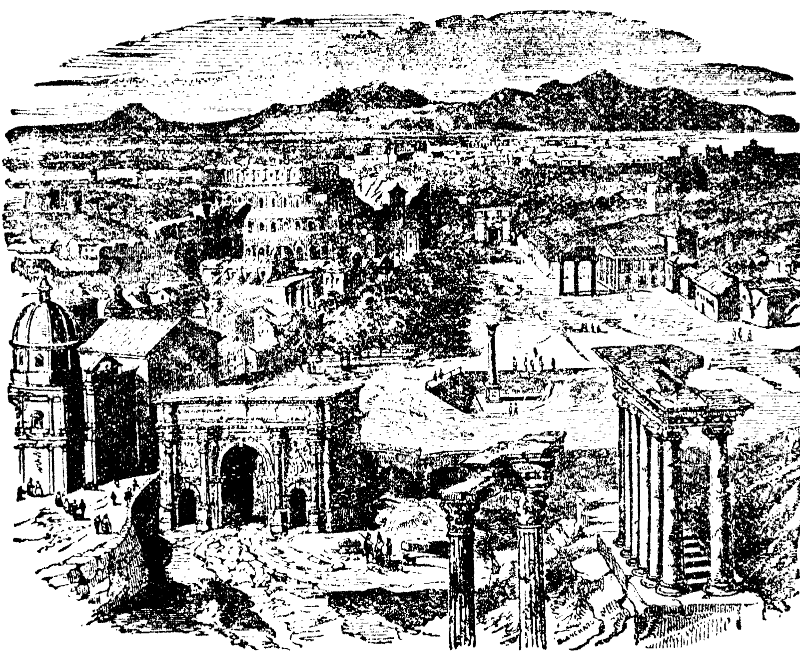
पहिले खिष्टीय प्रेरित की कथा

जो यूरप को भेजा गया

अर्थात्

पावल प्रेरित की कथा ।

प्रस्तावना ।



रोमनगर का चौक ।

पूर्वकाल में अर्थात अठारह सौ बरस बीते यूरप देश के निवासियों का धर्म्म कुछ उस धर्म्म के समान था जो अब हिन्दू लोगों में प्रचलित है । ऐसा जान पड़ता है कि उस काल के बहुत दिन आगे हिन्दुओं के और यूरप के

लोगों के पुरखे एक संग रहते और एक ही बोली बोलते और एक ही प्रकार के देवताओं को मानते थे। उस काल में वे सब आर्य लोग कहावते थे। जो आर्य लोग उस स्थान से बिदा हो पूरब की ओर चल हिन्दुस्तान में आ बसे सो उन्हों ने उन देवताओं की पूजा को जिन का बखान वेदों में मिलता है धीरे २ छोड़ दिया और ऐसी पूजा करने लगे जैसी पुराणों में सिखाई गई है। और जिन आर्यों ने पच्छिम की ओर चलके यूरप में ठिकाना लगाया सो बहुत देर लों अपने परम्परों के कई एक देवताओं को मानते रहे।



मिनरवा ज्ञान की देवी।

जो देवता वेदों में द्योपितर अर्थात स्वर्गपिता नाम से विख्यात था उस को यूरपवाले महादेवता समझते और जूपिटर नाम से पूजते थे। फिर उस को इन्द्र की सन्ती में अर्थात मेघस्वामी कहते थे। जो वेद में अग्नि कहावता था उस को इगनिस अर्थात पावक मानते थे। जूपिटर

की पत्नी जूनो थी। वे जूपिटर के दो पुत्रों को मानते थे अर्थात अपालो नाम सूर्य्य का देवता जो वेद में सूर्य्य कहलाता और मरक्यूरी जो देवदूत समझा जाता था। फिर जूपिटर की दो बेटियां थीं अर्थात मिनरवा ज्ञान की देवी और डैग्राना आखेट की देवी। वीनस काम की देवी कहलाती थी। उन लोगों में इतनी मूर्त्तें स्थापन किई जाती थीं कि उन के एक नगर के विषय में कहते थे कि यहां देवता का पाना मनुष्य के पाने से सहज है। इन देवी देवताओं के पूजने के लिये मन्दिर भी हर कहीं बनाये गये थे।

फिर उन देवी देवताओं के चालचलन जिन का आदरसन्मान यूरप में किया जाता था ऐसा बुरा था जैसा हिन्दुओं के देवताओं में भी वर्णन किया जाता है। वे एक दूसरे से लड़ते झगड़ते और नाना प्रकार का उपद्रव और अपराध किया करते थे और ऐसे दुष्टों के भजन करने से उन के उपासकों के मन और भी बिगड़ जाते थे। कहावत है कि जैसा देवता वैसा पुजारी और यह बात ठीक है। यदि जूपिटर बड़ा कुकर्म्मी वर्णन किया जाता था तो वे जो उस को देवताओं का महाराजा करके मानते थे सो क्यों उस की लीक पर न चलें।

फिर रोम देश के महाराजों का बहुत अनुचित आदर किया जाता था यहां लों कि जीते जी उन को देवता करके मानते थे और जैसा देवताओं के लिये मन्दिर बनाये जाते और यज्ञ होम चढ़ाये जाते वैसा ही इन महाराजों के नाम में किया जाता था।

यूरप की दक्खिन ओर एक भूमध्यस्थ नाम महासागर है जो यूरप को अफ्रिका से भिन्न कर देता है। इस



जूपिटर ।

महासागर के मध्य के समीप इटली नाम एक देश है तिस की रोम नगर राजधानी और जगत भर के नगरों में बड़ा और विख्यात था । यह लोग आसपास के समस्त कुलों को जीतकर महासागर के चारों ओर राज्य करने लगे ।



कान्षटनटीन का फाटक ।

जैसा कि मिश्नरी अर्थात पादरी लोग हिन्दुस्तान में लोगों को धर्म्म का सन्देश देने के लिये आते हैं वैसा एक मिश्नरी का जो शावल अर्थात पावल नाम था और उन सब में पहिला था जो यूरप में धर्म्मोपदेश देने के लिये गया था तिस का इस छोटी सी पुस्तक में थोड़ा सा वर्णन किया जाता है।

शावल की युवावस्था।

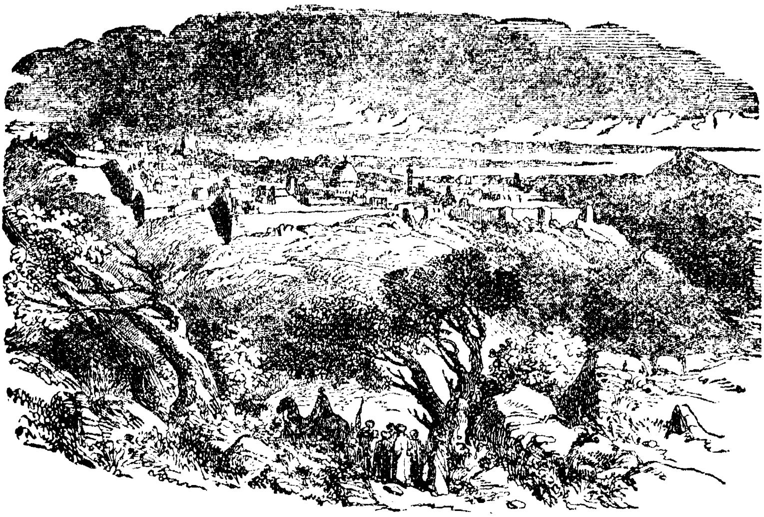
जिस काल में प्रभु यीशु ख्रीष्ट ने यिहूदिया देश में अवतार लिया उसी काल में अर्थात कुछ उन्नीस सौ बरस बीते शावल किलिकिया देश के तारसुस नाम एक प्रसिद्ध नगर में जन्मा। उस महासागर में जिस का वर्णन ऊपर हुआ सिदनस नाम एक नदी जा मिलती है उसी नदी पर सागर से थोड़ी दूर पर तारसुस नगर बना था। उन दिनों में वह स्वाधीन नगर था क्योंकि वहां के लोग अपने अधिपतों को रखते थे और अपने नियम को मानते रहे। वह अच्छे २ पाठशालों और ज्ञानी और विद्वान पण्डितों के कारण से रोम की नामी बस्तियों में प्रसिद्ध था और देश देश के विद्यार्थी जो वहां पढ़ने के लिये आते उस की गली कूचों में देखने में आते थे।

यद्यपि वह इस प्रतिमापूजक नगर में जन्मा तथापि शावल के माता पिता यिहूदी थे। उस के पुरखे वहां ब्योपार करने के लिये आये होंगे क्योंकि उस काल इस्राएली लोग सब देशों में ब्योपार करने के लिये आते जाते थे। शावल का पिता जो बिन्यामीन के सन्तान में से था सो फरीशी मतावलम्बी था और अपने पुत्र को दृढ़ता से वही मत सिखाया। फरीशियों की चर्चा बैबल में

बहुत पाई जाती है । वे लम्बे लम्बे बस्त्र पहिनते और लम्बी २ प्रार्थनाओं को करते और बहुत उपवास करते और ऊपरी धर्म्म की बातों को बहुत चाहते क्योंकि सब कुछ मनुष्यों को दिखाने के लिये करते थे परन्तु उन में कोई २ ईश्वर का सत्य सेवक भी पाया जाता था । यिहूदियों की भाषा इबरानी कहावती थी और शावल ने कहा कि मैं इब्रियों में से एक इब्री हूं । माता पिता दोनों इसराएल के बंश के बिन्यामीन के कुल के थे और इब्रानी बोलनेहारे थे यद्यपि उन यिहूदियों में जो अन्यदेशियों में रहते अधिक यूनानी बोलने की रीति प्रचलित हो गई थी । युवावस्था में शावल भी अपने पिता की नाईं मत में अति दृढ़ था और फरीशियों में फरीशी कहलाता था । पहिले वह अपने यिहूदी नाम से शावल जिस का अर्थ है मांगा हुआ कहावता था परन्तु पीछे जब वह अन्यदेशियों में उपदेश करता फिरता था तब अपने रोमी नाम से पावल अर्थात छोटा प्रसिद्ध था । जान पड़ता है कि उस की एक बहिन थी ।

यिहूदी लोगों का यह आचार था कि सब क्या धनी क्या निर्धन अपने पुत्रों को कोई विशेष हस्तकर्म्म सिखाते थे और उन में यह कहावत थी कि जो पुत्र को शिल्प नहीं सिखाता सो चोरी करना सिखाता है । सो शावल ने बकरी के बाल का डेरा बनाना सीखा और यही शिल्पविद्या जीवन भर उस के बहुत काम आई ।

फिर घर में परमेश्वर की व्यवस्था जैसा धर्म्मपुस्तक में लिखा है उस को भली भांति पढ़ाई गई और जब वह तेरह बरस का हुआ तब यिरूशलीम नगर को और भी शिक्षा पाने के लिये भेजा गया । वहां वह



यिरूशलीम नगर का चित्र।

कई बरस तक गमलिएल नाम एक प्रसिद्ध पण्डित का चेला बनकर पढ़ता रहा वह धर्म्मपुस्तक को बहुत बांचा करता और उस की बहुत बातें स्मरण करता था।

गमलिएल के विद्यार्थियों में शावल अति निपुण और ज्ञानवान था और वह यिहूदीधर्म्म की रीतों का बड़ा मान्नेहारा था और प्रगट होता है कि इस बुद्धि और ज्ञान प्राप्त करने से उस को रब्बी अर्थात शिक्षक की पदवी मिली होगी जैसा उन लोगों का व्यवहार था।

हिन्दुस्तान में बहुत से लड़के और तरुण लोग अपना अपना घर छोड़ बड़े बड़े नगरों की पाठशालों में पढ़ते हैं। वहां माता पिता की दृष्टि से अलग हो वे कभी कभी बड़े आलसी और दुराचारी होने लगते हैं। ऐसों के लिये शावल का निदर्शन लाभजनक है चाहिये कि सीखने में उद्योगी चालचलन में निष्पापी हों समस्त बातों में अपने स्वर्गीय पिता की इच्छानुसार चला करें।

शावल का दुःखदायक होना ।

जब शावल ने पद पाया तब वह तारसुस को लौट वहां कई बरस लों रहा होगा । इतने में प्रभु यीशु ख्रीष्ट क्रूस पर चढ़ाया गया और तीन दिन के पीछे मृत्युञ्जय हुआ और अपने चेलों में चालीस दिन और रहकर तिस के पीछे स्वर्ग पर उठाया गया और उस की आज्ञानुसार उस के प्रेरित लोग उस पर बिश्वास लाने का उपदेश यिरूशलीम में सुनाने लगे । जब वह वहां लौट गया तब दशा यह थी ।

ख्रीष्ट के चेलों में स्तीफान नाम एक बड़ा धर्म्मी और सत्यार्थी जन था जिस ने बिश्वास और पविचात्मा से परिपूर्ण होके बड़े बड़े अद्भुत और आश्चर्य्य कर्म्म लोगों के बीच दिखाये और ऐसे ज्ञान और आत्मा के संग लोगों से बार्त्ता करता था कि बिवाद करनेहारे उस का साम्हना न कर सकते थे । सो उन्हों ने लोगों को उभारा और झूठे साक्षियों को खड़ा किया और उसे दोषी ठहरा नगर के बाहर निकाल पत्थरवाह करने लगे । ज्यों २ वह मारा जाता त्यों त्यों वह यह प्रार्थना करता था कि हे प्रभु यीशु मेरे आत्मा को ग्रहण कर । फिर अपने प्रभु के मृदु-निदर्शन की पैरवी करके उस ने यह कहके अपने मारने-वालों के लिये दोहाई दिई कि हे प्रभु यह पाप उन पर मत लगा । यों कह वह ऐसे चैन से मूआ कि मानो सो जाता है ।

उस भीड़ में एक जवान था जो स्तीफान के मार डालने से प्रसन्न था और पत्थरवाह करनेहारों ने अपने कपड़े उस के पांवों पास उतार रक्खे । यह जवान शावल था । उन दिनों में वह अपने को निपट पविच और धर्म्मी जानता

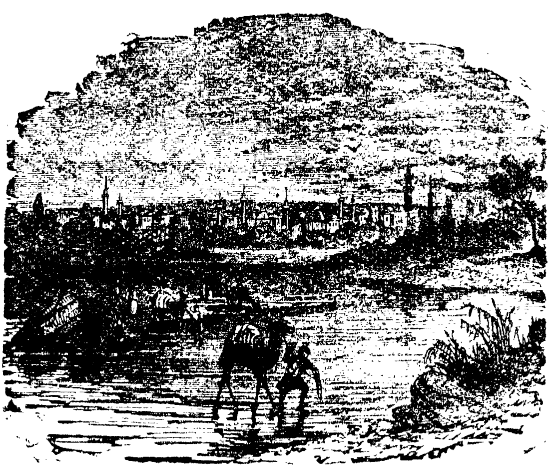
और यों सोचता था कि मेरे लिये कोई मुक्तिदाता अवश्य नहीं है। सो जब प्रभु यीशु का सन्देश पहिले उस को मिला तब उसे ईश्वर और त्राणकर्त्ता करके नहीं मानता बरन उसे त्यागकर तुच्छ जानता था। और जब उस के पड़ोसियों में कोई कोई ख्रिष्टीय होने लगे तब वह उन्हें दुःख दिया करता था वह घर घर घुसके पुरुष और स्त्रियों को पकड़के इस लिये उन्हें बन्दीगृह में डालता था कि वे ख्रीष्ट मुक्तिदाता पर बिश्वास करते थे। वह उन्हें धर्म्म सभाओं में कोड़े मारके धमकाता था कि फिर यीशु की सेवा टहल मत करो।

पूर्वकाल में बहुत राजा लोग यों बिचार करते थे कि सब प्रजा को उचित यह है कि हमारे धर्म्म को मानें और हमारे देवताओं को पूजें और यदि ऐसा न करें तो उन्हें दण्ड देना चाहिये। नबूखुदनजर नाम बाबुल देश का महाराजा ऐसा था क्योंकि उस ने साठ हाथ ऊंची एक सोने की मूर्त्ति बनवाई और उसे दूरा के चौगान में स्थापित किया और सब लोगों को आज्ञा दिई कि औंधे गिरके उस की पूजा करो नहीं तो उसी घड़ी आग के जलते भट्ठे में डाले जाओगे। वैसा ही देखने में आता है कि आजकल हिन्दू लोग उन को जो मूर्त्तिपूजा छोड़ ख्रीष्ट के चेले बनते हैं दुःख दिया करते हैं। यदि उन को शक्ति होती तो शावल के समान उपद्रव करते। यह बात अच्छी नहीं है। धर्म्म की बातों में चाहिये कि सब लोग स्वाधीन होवें और जो कुछ वह सत्य जानता है उस को मानता रहे क्योंकि हर एक को अपना अपना लेखा ईश्वर को देना पड़ता है।

स्तोफान उन में पहिला था जो ख्रीष्ट पर बिश्वास

करने के कारण मारा गया । उस समय से लेके सैकड़ों बरस लों बहुत और लोग उस मुक्तिदाता पर प्रीति लगाने के कारण बध किये गये । परन्तु उन का अन्त अच्छा हुआ क्योंकि वे अब ख्रीष्ट के संग स्वर्गबासी हैं । प्रभु ने आप कहा है कि धन्य वे जो धर्म्म के कारण सताये जाते हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। अब आनन्दित और आह्लादित हो वे परमेश्वर के सिंहासन के पास उस की स्तुति बड़ी मगनता से गा रहे हैं । उन का ख्रीष्ट के नाम पर दुःख उठाने का यही फल हुआ ।

शावल का मसीही हो जाना ।



दमेशक नगर का चित्र ।

यिहूदी याजक ख्रिष्टीयधर्म्म को फैलते हुए देखकर निपट अप्रसन्न हुए और उस के चेलों को दुःख दे दे उन्हों ने उस को रोकने चाहा परन्तु वह धर्म्म किसी के रोकने से न रुका । ख्रिष्टीय लोग बहुधा यिरूशलीम को छोड़ और और बस्तियों में जहां चैन से रह सकते थे रहने

लगे। और जहां कहीं जाते थे तहां सुसमाचार को प्रचारते जाते थे। सो याजकों के इस उपाय के द्वारा से ख्रिष्टीय धर्म्म बहुत अधिक फैल गया और प्रभु के चेले अगणित होने लगे।

दमेशक नाम सूरिया देश की राजधानी जगत भर के सुन्दर नगरों में एक बहुत ही पुरानी बस्ती थी बहुत से ख्रिष्टीय लोग वहां जाके शरणागत हुए और जो यिहूदी लोग वहां बस्ते थे उन को उन्हों ने बताया कि किस कारण से हम आये हैं और उन्हें मुक्तिदाता का सुसमाचार सुनाया उस बचन के सुन्ने से उन में से कोई कोई ख्रीष्ट के चेले होने लगे।

जब शावल को यह सन्देश मिला कि दमेशक में ख्रिष्टीयधर्म्म बहुत फैलता जाता है तब निपट क्रोध कर जलने लगा। उस ने महायाजक के पास जा दमेशक नगर की सभाओं के नाम पर चिट्ठियां मांगीं इस लिये कि यदि कोई मिले क्या पुरुष क्या स्त्री जो उस पन्थ के हों तो उन्हें बांधे हुए यिरूशलीम को ले आवे जिस्तें उन्हें बिचार करके दण्ड दे।

चिट्ठियां पा और भीड़ को संग ले शावल जिस की अब लों प्रभु के शिष्यों को धमकाने और घात करने को सांस फूल रही थी दमेशक की ओर सिधारा। यह यिरूशलीम से कुछ सात दिन का मार्ग था। दो पहर दिन को उन लोगों ने नगर की श्वेत भीतों और गढ़ों को दूर से देखा तब अचांचक स्वर्ग से सूर्य्य के तेज से अधिक एक ज्योति उन की चारों ओर चमकी। इस से वे चौंधिया गये और औंधे मुंह भूमि पर गिर पड़े। और शावल ने देखा कि प्रभु यीशु ख्रीष्ट बड़ा तेजोमय हो मेरे आगे खड़ा

है। तब एक शब्द सुन्ने में आया पर शावल को छोड़ कोई उस बचन को समझता न था। उस का तात्पर्य्य बिशेष करके उस के लिये था। वह बात जो सुन्ने में आई सो यह थी कि हे शावल शावल तू मुझे क्यों सताता है। उस ने कहा हे प्रभु तू कौन है। प्रभु ने कहा मैं यीशु हूं जिसे तू सताता है। जब बैल पैनों पर लात मारता तब केवल अपने को अधिक दुःख देता है वैसा ही ख्रीष्टियों के सताने से शावल केवल अपनी हानि करता



पावल का गिराया जाना।

था। अपने प्रभु की बात सुन शावल ने झट जान लिया कि अब लों मेरा चालचलन बुरा था और यीशु मुक्तिदाता को मान्ना और प्यार करना उचित है। उस ने बड़ी कोमलता से कम्पित और अचंभित हो कहा हे प्रभु तू क्या चाहता है कि मैं करूं। प्रभु ने कहा कि उठके खड़ा हो और नगर में जा और तुझ से कहा जायगा कि

तुझे क्या करना उचित है। जब शावल उठके आंखें खोलने लगा तब देख न सका क्योंकि उस ज्योति के मारे अंधा हो गया था। तब उस ने दमेशक में प्रवेश किया ऐसा घमंडी और दयाहीन नहीं जैसा पहिले आता था पर बड़ी दीनता से क्योंकि लोग उस के हाथ को पकड़के उसे नगर में ले आये। वह तीन दिन लों नहीं देख सकता था और न खाता न पीता था। जब एकांत में बैठा हुआ अपने बीते जीवन पर सोचता था तब अपने को पापी समझने और ईश्वर से क्षमा मांगने लगा। उस की प्रार्थना सुनी गई और अननियाह नाम एक धर्म्मी पुरुष को यह आज्ञा मिली कि उठके शावल को ढूंढ़ और उस पर हाथ रख कि वह दृष्टि पावे।

यह बात सुन अननियाह डरा क्योंकि सुना था कि शावल ने यिरूशलीम में क्या किया था और किस मनोरथ से अब दमेशक में आया है। परन्तु प्रभु ने उसे उत्तर दिया कि चला जा क्योंकि शावल अन्यदेशियों और राजाओं और इसराएल के सन्तानों के आगे मेरा नाम पहुंचाने को मेरा चुना हुआ है। तब अननियाह ने शावल पास जा उस पर हाथ रख कहा हे भाई शावल प्रभु यीशु ने जिस ने उस मार्ग में जिस से तू आता था तुझ को दर्शन दिया मुझे भेजा है इस लिये कि तू दृष्टि पावे और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होवे और तुरन्त उस की आंखों से छिलके से गिर पड़े और वह फिर देखने लगा और उठके अननियाह के हाथ से बपतिस्मा लिया और भोजन करके बल पाया।

तिस समय से शावल मानो नवीन पुरुष हो गया। तब से उस धर्म्म को जिसे पहिले नाश किया चाहता

था वह स्थिर करने के लिये परिश्रम करता था और सकल जगत के आगे मान लेता था कि हां इस बात के विषय में बड़ा अपराधी हुआ क्योंकि चेलों को दुःख दे मैं उन के स्वामी को दुःख देनेहारा ठहरा। क्योंकि प्रभु यीशु ख्रीष्ट उस कृपा अथवा उस उपद्रव को जो उस के पुजेरियों से किया जाता सो अपनाता है और कहता है कि मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम ने मेरे इन अति छोटे भाइयों में से एक से जोई भर किया सो मुझ से किया। पहिले से शावल ने बार बार प्रार्थना का बचन मुंह से निकाला था परन्तु अब से मन की सच्चाई से एकान्त में परमेश्वर से प्रार्थना करने लगा। यदि तुम चाहते हो कि जैसा उस को जन्म भर के पापों से छुटकारा मिला सो तुम को भी मिल जाय तो उस के समान ईश्वर के पास जा बिन्ती करो कि हे परमेश्वर मुझ पापी पर दया कीजिये।

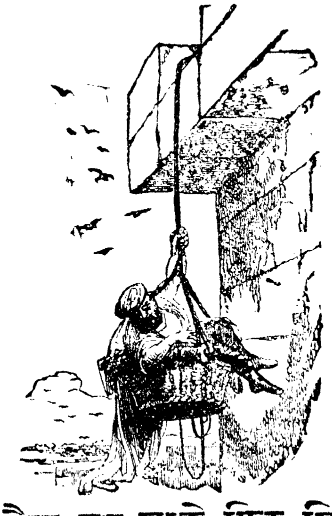
शावल का यिरूशलीम को भागना।

बपतिस्मा पाने के पीछे शावल तुरन्त धर्म्मसभाओं में यीशु की कथा सुनाने लगा कि वह ईश्वर का पुत्र और मुक्तिदाता है। और सब सुननेहारे बिस्मित हो कहने लगे क्या यह वह नहीं है जिस ने यिरूशलीम में ख्रीष्टियों को दुःख दिया और यहां इस लिये आया था कि उन्हें बांधे हुए प्रधान याजकों के आगे पहुंचावे।

थोड़े दिन लों दमेशक में रह शावल अरब देश में चला गया। ऐसा जान पड़ता है कि तीन बरस लों वहां अपने अगले बृत्तान्त पर सोच करता और उस नये काम

के लिये जिस के लिये ईश्वर उसे बुलाता था योग्यता प्राप्त करने में दिन बिताता था। तिस के पीछे वह दमेशक में लौट आया और फिर सभाओं में यीशु की कथा प्रचारने लगा। वह और भी दृढ़ होता गया और यही ख्रीष्ट है इस बात का प्रमाण देके दमेशक में रहनेहारे यिहूदियों को व्याकुल किया। सुन्नेहारे उस के बचन को झुठला न सके परन्तु निपट क्रोधित हो उन्हों ने उसे मार डालने का आपस में बिचार किया जिस्तें उस का उपदेश देना बंद हो जाय क्योंकि उस की बातों से अप्रसन्न हुए। ऐसा न हो कि वह नगर से भाग निकले वे सर्कार से रखवालों को मांग रात और दिन नगर के फाटकों पर पहरा देते थे जिस्तें उस को पकड़के घात करें।

परन्तु शावल के मित्रों ने ऐसा उपाय निकाला कि जिस से वह बच निकला। उन में से कोई ऐसे घर में रहता था जो नगर की भीत पर बना था सो शिष्यों ने उसे वहां ले जा रात को टोकरे में लटकाके भीत पर



से उतार दिया और वह जाके फिर यिरूशलीम में बसने

लगा। अब देखिये कि शावल में कैसी नवीनता हो गई है। तब ख्रीष्टियों को घात करने के लिये ढूंढ़ता फिरता था अब उन ख्रीष्टियों को अपना प्यारा मित्र समझता है। तब वह दुःखदेनेहारों में प्रधान था अब इस बात में आनन्दित है कि मैं ख्रीष्ट के नाम पर दुःख उठाने के योग्य गिना जाता हूं।

एक कारण जिस से शावल फिर यिरूशलीम में जाया चाहता था यह था कि शिमोन पितर से जिस का बहुत वृत्तान्त सुना था भेंट करे क्योंकि पितर ने कई बरस लों ख्रीष्ट के संग भ्रमण कर उस के क्रूस पर चढ़ाये जाने लों उस की संगति किई थी और उस की बहुत कथा कह सकता था सो यिरूशलीम में आ शावल शिष्यों को ढूंढ़ने लगा परन्तु वे सब उस के मिलने से डरते थे क्योंकि यह विचार करते थे कि हमारा बैरी शिष्य होने का बहाना कर हमें धोखा दे घात करेगा अथवा हमें प्रधान याजकों के हाथ में सौंप देगा। परन्तु बरनबा नाम एक धर्म्मी जन शावल के बचन पर बिश्वास कर उसे ले करके प्रेरितों के पास लाया और उन से कह दिया कि उस ने क्योंकर मार्ग में प्रभु को देखा था और प्रभु उस से बोला था और क्योंकर उस ने दमेशक में यीशु के नाम से खोलके बात किई थी। तब शिष्यों ने मगन हो उसे ग्रहण किया और पितर उसे अपने घर में ले गया। हम जानते कि उस दिन उन दो जनों में बहुत बातचीत हुई होगी और कि ख्रीष्ट के कितने आश्चर्य्य कर्म्मों और दया के बचनों की बहुत चर्चा हुई होगी क्योंकि शावल ने चाहा कि जो कुछ पितर ने देखा और सुना था जब लों प्रभु के संग रहा सब कह सुनावे। फिर शावल यिरूशलीम

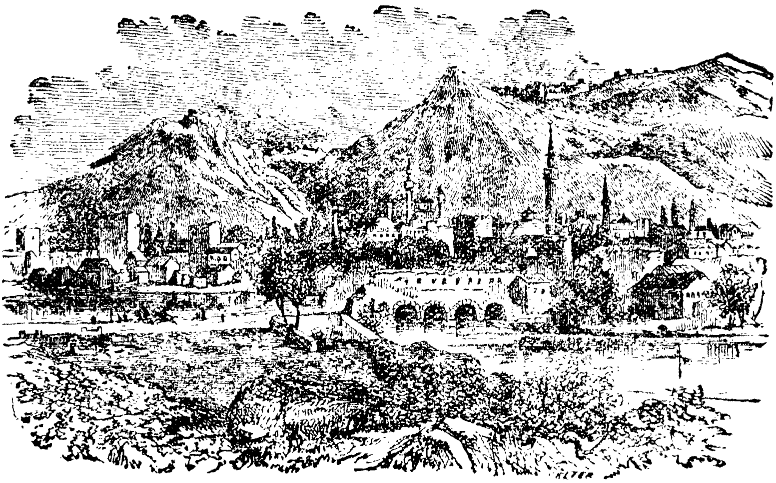
हों में यह बात प्रचारने लगा कि यीशु ईश्वर का पुत्र और पापियों का त्राणकर्त्ता है इस से यिहूदी लोग कोपित हुए और फिर उसे मार डालने का यत्न करने लगे। एक दिन ज्योंही शावल मन्दिर में प्रार्थना करता था त्योंही वह बेसुध हुआ और यीशु ने उस पर प्रगट हो यों कहा कि शीघ्रता करके यिरूशलीम से झट निकल जा क्योंकि वे मेरे विषय में तेरी साक्षी ग्रहण न करेंगे। शावल ने वहां रहने चाहा उस ने यह सोचा कि सब लोग जानते हैं कि मैं मसीहियों को बड़ा दुःख देनेहारा था सो अब जब ख्रीष्ट का उपदेश देता हूं वे निश्चय मेरी बात को मानेंगे। परन्तु प्रभु ने उत्तर दिया कि चला जा क्योंकि मैं तुझे अन्यदेशियों के पास दूर भेजूंगा। पितर के संग पन्द्रह दिन रहकर शिष्य लोग चुपके से शावल को कैसरिया में लाये और वहां नौका पर चढ़के वह तरसुस की ओर बिदा हुआ।

शावल के इस बृत्तान्त से हम देखते हैं कि ईश्वर अपने लोगों की बड़ी रक्षा करता है। उस की इच्छा विरुद्ध कोई बैरी उन की कुछ हानि नहीं कर सकता है उन्हें उस के नाम पर दुःख उठाना अथवा उस के नाम के लिये प्राण भी देना होवे तो होवे तथापि उस का फल अच्छा होगा क्योंकि लिखा है कि जो लोग ईश्वर को प्यार करते हैं उन के लिये सब बातें मिलके भलाई ही का कार्य्य करती हैं।

कभी कभी ऐसे लोग हैं जो ख्रीष्ट के गुप्त चेले होने चाहते हैं। वे उसे मुक्तिदाता जानते परन्तु औरों के साम्हने उस के स्वीकार करने से डरते हैं। शावल ऐसा डरपोक नहीं था। जिस प्रभु को मानता था तिस का नाम

सभाओं में प्रचार करता था। यदि हम भी उस की नाईं भयहीन होने चाहते तो हम भी पविचात्मा का दान पाकर नवीन बन जायें तब मनुष्यों से न डरेंगे ।

शिष्यों का पहिले मसीही कहलाना ।



अन्ताकिया नगर का चित्र ।

सूरिया देश का मुख्य नगर अन्ताकिया था उस का ओरांतीस नदी के ऊपर अति सुन्दर स्थान था। उस के चौगिर्द बड़े बड़े पर्ब्बत थे और उस के अच्छे जल वायु और बड़ी बड़ी कोठियों और मनभावन फुलवारियों से मोहित हो लोग दूर से उस में बसने के लिये आते थे। नगर के निवासी बड़े भोगविलास करनेहारे थे और अधर्म्म उन में अधिक फैल गया था। पुरुषों और घोड़ों के दौड़ने में और नाना प्रकार के तमाशों में वे अधिक मन लगाते और ताराफलित आदि छलियों की बातों को बहुत मानते थे। उस काल में अन्ताकिया बस्ती पूर्ब की महारानी कहावती थी ।

जब कि शिष्य लोग यिरूशलीम में दुःख पा वहां से भाग गये उन में से कितने अन्ताकिया में आके रहने लगे। जो पहिले आये सो यिहूदियों में उपदेश करते थे पर पीछे और लोग भी आन पहुंचे जो यूनानियों को भी मंगल-समाचार सुनाने लगे। और सुन्नेहारों में से बहुत बिश्वास भी करते थे। जब इस बात का सन्देश यिरूशलीम में पहुंचा तब भाइयों ने बरनबा को इन यूनानी शिष्यों को शिक्षा देने के लिये भेजा। वह जब पहुंचा और ईश्वर के अनुग्रह को देखा तब आनन्दित हुआ और सभों को उपदेश दिया कि मन की अभिलाषा सहित प्रभु से मिले रहो क्योंकि वह भला मनुष्य और पवित्रात्मा और बिश्वास से परिपूर्ण था और बहुत लोग ख्रिष्टीय हो गये।

परन्तु इस बड़े मूर्त्तिपूजक नगर में काम अधिक देख पड़ता था सो बरनबा शावल को ढूंढ़ने के लिये तरसुस को गया। शावल मगन हो उस के संग चला आया और वे दोनों जन बरस भर मंडली में एक संग लोगों को उपदेश देते रहे।

इतने में यिहूदिया देश में बड़ा अकाल पड़ने लगा। जब अन्ताकिया के ख्रिष्टीय लोगों ने सुना तब उन्हों ने हर एक अपनी अपनी सम्पत्ति के अनुसार यिहूदिया में रहनेहारे भाइयों की सेवकाई के लिये कुछ भेजने को ठहराया और इन दोनों को बरनबा और शावल के हाथ प्राचीनों के पास भेजा पर वे वहां बेर लों न ठहरे और अपनी सेवकाई शीघ्र पूरी कर वे अन्ताकिया को लौट आये। योहन मार्क एक जवान भी जो बरनबा का भांजा था काम करने के लिये उन के संग आया।

अन्ताकिया नगर इस बात से विख्यात है कि बिश्वासी

लोग पहिले वहां ख्रीष्टियान अर्थात मसीही कहलाये। इस समय से पहिले वे शिष्य अथवा चेले अथवा प्रभु-भक्त कहलाते थे। पर अन्ताकिया के रहनेहारे उन्हें ठट्ठे से इस नाम से पुकारने लगे। लड़के चिल्लाते थे अरे ख्रीष्टियान और बड़े लोग भी इस कुवचन कहने से प्रसन्न हुए परन्तु यह नाम जो पहिले थोड़े से लोगों को एक दूर नगर में दिया गया अब सकल जगत में प्रसिद्ध है। पहिले यह नाम ठट्ठे में दिया गया अब वह आदर का नाम हो गया है।

ख्रीष्टियान शब्द का अर्थ ख्रीष्ट का चेला है अर्थात वह जो ख्रीष्ट की सेवा टहल कर उस ही को प्रभु करके मानता है। बहुत हिन्दू लोग समझते हैं कि सब अंग्रेज लोग ख्रिष्टीय हैं। पर यह भूल है। बहुत से नाम के ख्रिष्टीय हैं जो काम के ख्रिष्टीय नहीं हैं। यह नाम केवल उस मनुष्य को देना चाहिये जो तन मन से ख्रीष्ट को प्यार करता और सब बातों में उसे प्रसन्न करने चाहता है। जो कोई संसार के सुख बिलास पर मन लगाता और जो कोई अपने पापों में मगन रहता सो सत्य ख्रीष्टियान नहीं हो सकता है। चाहे ख्रीष्ट को प्रभु प्रभु करके पुकारे भी वह पिछले दिन ऐसा सभों से कहेगा मैं ने तुम को कभी नहीं जाना है कुकर्म्म करनेहारो मुझ से दूर होओ।

शावल की पहिली धर्म्म प्रचारनार्थ यात्रा।

शावल का कुपरस में उपदेश देना।

जब शावल और बरनबा अन्ताकिया में थे तब ख्रिष्टीय

मंडली उपवास सहित प्रभु की सेवा करती थी और पवित्रात्मा ने कहा मैं ने बरनबा और शावल को जिस काम के लिये बुलाया है उस काम के निमित्त उन्हें मेरे लिये अलग करो। अर्थ इस का यह था कि वे मूर्त्तिपूजकों को पहिले ख्रिष्टीय धर्म्मप्रचारक होवें। सो परमेश्वर का आशीर्वाद मांग अपने मित्रों से बिदा हो योहन मार्क को संग ले वे चले गये।

बरनबा कुपरस का निवासी था। यह एक बड़ा और सुन्दर टापू है जो अन्ताकिया से एक दिन की यात्रा दूर है। पहिले उस टापू को जा उन्हों ने सालामी नाम एक बड़ी बस्ती में प्रवेश किया। इस बस्ती में बहुत से यिहूदी रहते थे सो उन की सभाओं में जा प्रेरित लोग धर्म्मोपदेश देते थे। तब इधर उधर उस टापू में जो एक सौ तीस मील लम्बा था वे प्रचारते चले जाते थे। अन्त को पाफ़स नगर में पहुंचे जहां वीनस नाम रति की देवी का एक मन्दिर बना था। वीनस की यजिनियां हिन्दुओं की कंचनियों की नाईं होती थीं और वहां की पूजा निपट भ्रष्ट होती थी। पाफ़स नगर में सरजिय पावल नाम टापू का प्रधान रहता था। वह बुद्धिमान था और देश की रीतों और देवताओं से प्रसन्न न रहता पर यह बूझा चाहता था कि सत्य धर्म्म क्या है। जब कि उस ने सुना कि दो परदेशी अद्भुत सन्देश देते हैं तब बरनबा और शावल को अपने पास बुला उन से ईश्वर का बचन सुन्ने चाहा।

उन दिनों में लोग बहुधा अज्ञान और नाना प्रकार के झूठों के मान्नेहारे थे। लोग ताराफलितों से पूछा करते और मंत्रों को काम में लाते थे जैसा हिन्दू लोग भी अब लों करते हैं। इस प्रधान के पास इलु[illegible]

विख्यात टोन्हा और झूठा भविष्यद्वक्ता था। वह बड़ा बोल बोलकर कहता कि जो बात होनेवाली है उस को मैं वर्णन कर सकता और मंत्रों के द्वारा बड़े बड़े आश्चर्य्य कर्म्म भी कर सकता हूं और इस बहाने से कि मैं आप के काम को सुफल कर सकता हूं प्रधान से बहुत द्रव्य को प्राप्त करता था।

इलुमा देखता रहा कि क्या प्रधान इन नये उपदेशकों को मानेगा वा न मानेगा। जब प्रगट हुआ कि प्रधान उन के बचन से प्रसन्न है तब क्रोध में आ बिचार करने लगा कि इन को बात सुन वह मेरे हाथ से छूटेगा सो प्रेरितों का साम्हना करके प्रधान को बिश्वास की ओर से बहकाने चाहता था। तब शावल ने पवित्रात्मा से परिपूर्ण होके और उस की ओर ताकके कहा हे सारे कपट और सब कुचाल से भरे हुए शैतान के पुत्र सकल धर्म्म के बैरी क्या तू प्रभु के सीधे मार्गों को टेढ़ा करना न छोड़ेगा। अब देख प्रभु का हाथ तुझ पर है और तू कितने समय लों अन्धा होगा और सूर्य्य को न देखेगा। परन्तु धुंधलाई और अंधकार इलुमा पर पड़ा और वह इधर उधर टटोलने लगा कि कोई हाथ पकड़के मुझे घर ले जाये और अपने सारे जादू और मंत्रों के द्वारा वह इस बिपत्ति को दूर न कर सकता था। जब प्रधान ने देखा और सुना तब अचंभित हो प्रभु के नाम पर बिश्वास करने लगा।

इस समय से धर्म्मपुस्तक में शावल का रोमी नाम पावल प्रचलित है जब लों यिहूदियों में काम करता था तब लों अपने यिहूदी नाम से शावल कहावता था परन्तु जब से परदेशियों में काम करने लगा उस का रोमी नाम आज लों प्रसिद्ध है।

इलुमा के वृत्तान्त से यह जाना जाता है कि ईश्वर से लड़ना और उस के सुसमाचार के बिरुद्ध उपाय करना बृथा है। बहुत दुष्ट ऐसा यत्न कर गये हैं पर उन की दौड़ धूप से केवल इतना फल हुआ कि उन्हों ने अपने को सत्यानाश किया। पर हां जन्म से हम भी दुष्ट हैं और सब मनुष्य पाप की अवस्था में जन्म पा जब लों पवित्रात्मा से नवीन न बनें तब लों इलुमा की नाईं इस योग्य हैं कि शैतान के पुत्र और सकल धर्म्म के बैरी कहलावें सो यह प्रार्थना करना चाहिये कि हे प्रभु पवित्र आत्मा का दान दे हम में नवीन और शुद्ध मन बना दीजिये।

पावल का क्षुद्र आशिया में उपदेश देना।

पावल और उस के संगी अर्थात बरनबा और योहन मार्क पाफ़स से नौका खोलके परगा नगर में जो क्षुद्र आशिया के तीर पर बना है आ पहुंचे। क्षुद्र आशिया बड़े आशिया के उस भाग को कहते हैं जो बड़े समुद्र और काले समुद्र के बीच में है। उस देश की उत्तर ओर तौरुस नाम पर्ब्बत है और बीचोबीच में एक ऊंची चौरस भूमि है तिस में कहीं कहीं बस्तियां हैं और कहीं कहीं शिलामय और उजाड़ भूमि है। इन जंगलों के खोहों में बटमार भी छिपे रहते थे जो वहां के बहुत यात्रियों को मारकर लूटते थे। ऐसा देख पड़ता है कि योहन मार्क इस भयंकर देश में भ्रमण करने से प्रसन्न न हुआ सो प्रेरितों को छोड़ वह यिरूशलीम में लौट आया।

सागर छोड़ और पर्ब्बत पर चढ़ पावल और बरनबा पिसिदिया देश के अन्तािकया नगर में पहुंचे। यह वह

बड़ा अन्ताकिया नगर जो प्रसिद्ध है सो नहीं है क्योंकि वह दूसरे देश में है परन्तु नाम वही है। नगर में प्रवेश कर वे बिश्राम के दिन सभा के घर में जा बैठे और व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तक के पढ़े जाने के पीछे सभा के अध्यक्षों ने उन के पास कहला भेजा कि हे भाइयो यदि लोगों के लिये उपदेश की कोई बात आप लोगों के मन में होय तो कहिये। यह बचन सुन पावल ने खड़ा हो और हाथ से सैन कर उन्हें ख्रिष्टीय मंगलसमाचार सुनाया। उस ने बेर लों उन्हें अपने सन्तान के इतिहास के विषय में और ख्रीष्ट के आने और दुःख उठाने और मारे जाने और जी उठने के विषय में समझाया और कहा हे भाइयो जानो कि इसी के द्वारा पापमोचन की कथा तुम को सुनाई जाती है।

जब यिहूदी लोग सभा के घर में से निकलते थे तब अन्यदेशियों ने बिन्ती किई कि ये बातें अगले बिश्रामवार को हम से कही जायें। सो दूसरे बिश्रामवार को नगर के प्रायः सब लोग ईश्वर का बचन सुन्ने को एकट्ठे आये। परन्तु यिहूदियों में से बहुत लोग अन्यदेशियों की बड़ी भीड़ को देख डाह से भर गये। वे यह कहते थे कि सैकड़ों बरस से हम ही ईश्वर के चुने हुए सन्तान हैं और उस से बचन दिया गया कि मुक्तिदाता दाऊद के राजबंश से उत्पन्न होगा तो इस बात में अन्यदेशियों का क्या सम्बन्ध है। वे न जानते थे कि ख्रीष्ट सकल जगत के सन्तानों के लिये मुक्तिदाता होके आया है। सो जब प्रेरितों ने सुनाया कि निस्तार संसार के सब लोगों को सेंत मिल सकता है तो तुरन्त इस बात को झुठलाने लगे। तब पावल और बरनबा ने साहस करके कहा

अवश्य था कि ईश्वर का बचन पहिले तुम्हों से कहा जाय परन्तु जब कि तुम उसे दूर करते हो और अपने तईं अनन्त जीवन के अयोग्य ठहराते हो तो देखो हम अन्य-देशियों की ओर फिरते हैं।

इस से यूनानी लोग आनन्दित हुए और उन में से बहुतों ने बिश्वास किया और प्रभु का बचन उस सारे देश में फैलने लगा परन्तु यिहूदी और भी क्रोधित हो प्रेरितों पर उपद्रव करवाने लगे यहां लों कि अन्त को उन्हें अपने सिवानों में से निकाल दिया। वहां से अस्सी मील पूर्ब की ओर चल पावल और बरनबा इकोनिया नगर में आये। वहां अति साहस करके मंगलसमाचार प्रचारने लगे यहां लों कि यिहूदियों और यूनानियों में से भी बहुत लोगों ने बिश्वास किया। सो प्रेरितों ने प्रभु के भरोसे जो अपने अनुग्रह के बचन पर साक्षी देता था और उन के हाथों से चिन्ह और अद्भुत काम करवाता था साहस से बात करते हुए बहुत दिन बिताये।

जैसा और नगरों में वैसे ही इकोनिया में भी दुष्ट यिहूदियों ने उन की दुर्दशा करने और उन्हें पत्थरवाह करने को हल्ला किया। जब प्रेरित जान गये तब वहां से भाग दूर दूर स्थानों में उपदेश देने लगे।

हे पढ़नेहारो निस्तार का सन्देश तुम को ऐसा दिया जाता है जैसा उस देश में दिया गया था क्या तुम यूनानियों की नाईं उसे ग्रहण करोगे अथवा यिहूदियों की नाईं तुच्छ जानोगे। ईश्वर के बचन को स्मरण करो कि ईश्वर ने जगत को ऐसा प्यार किया कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दिया कि जो कोई उस पर बिश्वास करे सो नाश न होय परन्तु अनन्त जीवन पावे। और

जो उस पर बिश्वास नहीं करता सो दंड के योग्य ठहर चुका है क्योंकि उस ने ईश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर बिश्वास नहीं किया है ।

एक लंगड़े का चंगा होना ।

फिर पावल और बरनबा लुस्त्रा नाम एक बस्ती में गये । वहां सभा का घर न था सो जहां कहीं लोगों को एकट्ठा पाते तहां उन्हें उपदेश दिया करते थे । सुन्नेहारों में एक बेचारा जन था जो जन्म से पांवों से निर्बल और इस कारण से कि लंगड़ा था और कभी नहीं चला था । सो जब वह बार्त्ता को मन लगा सुन रहा था पावल ने उस की ओर ताकके देखा कि उस को चंगा किये जाने का बिश्वास है और बड़े शब्द से उसे कहा अपने पांवों पर सीधा खड़ा हो और तुरन्त वह लंगड़ा कूदने और फिरने लगा । पावल ने जो किया उसे देखके लोग अचम्भित हो चिल्लाने लगे कि देवगण मनुष्यों के समान होके हमारे पास उतर आये हैं ।

एक प्राचीन कथा यह थी कि किसी समय में दो देवते मनुष्य होके उस देश में भ्रमण कर गये थे तो यह आश्चर्य्य नहीं था कि अज्ञान और अनपढ़े लोग यह सोचें कि हमारे देवते फिर हमारे पास आये हैं क्योंकि निःसन्देह वह आश्चर्य्य कर्म्म जो उन के साम्हने किया गया था सो ऐसा था जिसे मनुष्य की सामर्थ्य कर नहीं सकती थी ।

प्रगट होता है कि बरनबा पावल से कुछ बूढ़ा और दीर्घतनु था सो लोग मन में कहने लगे कि यह जूपिटर अर्थात देवताओं का स्वामी होगा और पावल को वे हर्मी अर्थात देवताओं का सुवक्ता कहते थे इस लिये कि वह अच्छा बोलनेहारा था । लुस्त्रा के लोग जूपिटर को

अपना मुख्य देवता समझते थे और उस का मन्दिर वहां बना था। सो जब उस के पुजारी ने सुना कि लोग क्या पुकारते हैं तब बैलें को और फूलें के हारें को प्रेरितें के पास ला लोगें के संग उन के आगे बलिदान किया चाहता था।

परन्तु पावल और बरनबा ने जब देखा कि लोग हमें पूजने चाहते हैं तब बिस्मित हो अपने कपड़े फाड़े और लोगें की ओर लपके और पुकारके बोले कि हे मनुष्यो यह क्यों करते हो। हम भी तुम्हारे समान दुःख सुख भोगी मनुष्य हैं और तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं कि तुम इन व्यर्थ बिषयें से जीवते ईश्वर की ओर फिरो जिस ने स्वर्ग औ पृथिवी औ समुद्र और सब कुछ जो इन में है बनाया। परन्तु लोग यह कहते रहे यह देवते ही हैं उन के आगे बलिदान तो करना चाहिये।

पावल का पत्थरवाह किया जाना।

इतने में कई एक यिहूदियें ने जो प्रेरितें से निपट बैर करते थे अन्ताकिया और इकोनिया से आके लोगें को उसकाया कि यह लोग दुष्ट और छली हैं इन को पूजना नहीं परन्तु घात करना चाहिये। सो उन्हें ने पावल को पत्थरवाह किया और यह समझकर कि वह मर गया उसे नगर के बाहर घसीट ले गये जिस्तें कुत्ते और पत्ती उस की लोथ को खावें। परन्तु पावल केवल मूर्छित हुआ और जब शिष्य लोगें ने उसे फिर घेर लिया जिस्तें बिलाप करें वह होश में आ लंगड़े के समान उठ खड़ा हुआ और उन के संग नगर में प्रवेश किया।

दूसरे दिन पावल और बरनबा दरबी को चले गये।

जब उन्हों ने उस नगर के लोगों को सुसमाचार सुनाया और बहुतों को शिष्य किया था तब वे लुस्त्रा और इकोनिया और अन्ताकिया को लौटे। पर वे क्योंकर ऐसे स्थानों में फिर गये जहां पहिले उन की ऐसी दुर्दशा हुई थी। इस का उत्तर यह है कि वे अपनी रक्षा के लिये चिन्ता नहीं करते थे परन्तु उन की इच्छा यह थी कि उन लोगों को जो उन के यत्न से शिष्य हो गये थे और भी शिक्षा दें और उन को ढाढ़स बंधावें कि अंत लों वे बिश्वास में दृढ़ रहें। सो वे उन को ख्रिष्टीय मंडलियों में जोड़ देते थे और एक एक मंडली में प्राचीनों को उन के ऊपर ठहराते थे जो उन की रखवाली करें। फिर वे उन को समझाते थे कि बिश्वास में बने रहो और कि हमें बड़े क्लेश से ईश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा और वे उन के लिये प्रार्थना भी करते थे और उन्हें परमेश्वर के कृपामय हाथों में जिस पर उन का भरोसा था सौंप दिया।

तिस के पीछे नौका पर अन्ताकिया को चले अर्थात सूरिया देश के राजनगर को जहां से पहिले निकले थे। वहां पहुंचके और मंडली के सब ख्रीष्टियों को बुलाके उन्हों ने अपनी याचा का सकल बृत्तान्त सुनाया और यह कि ईश्वर ने हमारे साथ कैसे बड़े काम किये थे और कि उस ने यूनानियों के लिये भी विश्वास का द्वार खोला था।

जब हम देखते हैं कि प्रेरित लोगों ने कितने दूर दूर देशों की याचा किई और मंगलसमाचार सुनाने के लिये कितना कष्ट और बिपत्तें सहीं तब अचंभित होते हैं। पावल को बार बार दुःख दिया गया वह मारा गया

और पत्थरवाह किया गया किन्तु उस ने उपदेश देना न छोड़ा। वह आप कहता था कि यह दुःख केवल दो चार दिन का है और उस का फल अनन्त जीवन का सुख है। अभी पावल स्वर्गबासी हो उन सब दुःखों में जिन्हें ख्रीष्ट के लिये उठाया आनन्दित है क्योंकि जो कुछ हम प्रभु को प्यार करके करते हैं सो स्वर्ग में उस का बड़ा प्रतिफल होता है। चाहिये कि हम भी उन के समान ख्रीष्ट को ऐसा प्यार करें कि उस की प्रीति का बर्णन और लोगों से भी किया करें और उन की बिन्ती किया करें कि भाइयो यीशु मुक्तिदाता के शरणागत होओ। यदि प्रभु हमें दूर दूर स्थानों में उस के नाम का प्रचार करने के लिये भेजे भी तो तुरन्त मान्ना चाहिये और यदि उस के नाम में दुःख उठाना हो तो हम आनन्दित हो जय जयकार करें।

पहिला ख्रिष्टीय समाज।

पावल और बरनबा कई बरस अन्ताकिया में रहे और उन बहुत यूनानियों को जो शिष्य हो गये थे शिक्षा देते रहे। पर इतने में कितने खिजानेवाले यिहूदिया से आके भाइयों को उपदेश देने लगे कि जो मूसा की रीतों को त्याग देता सो त्राण नहीं पा सकता है। पावल और बरनबा ने कहा कि मूसा की रीतें यिहूदियों के लिये हुईं और अवश्य नहीं कि यूनानियों के सन्तान उन्हें मानें। इस बात पर बहुत बिचार और बिवाद होने लगा। अंत को भाइयों ने ठाना कि इस बात के निर्णय करने के लिये एक बड़ा धर्म्मसमाज यिरूशलीम में एकट्ठा किया जाय। सो पावल और बरनबा और अन्ताकिया की

मंडली के कई एक प्राचीन उस नगर की ओर सिधारे। जाते जाते उन्हों ने बहुत बस्तियों में मंगलसमाचार सुनाया और अन्यदेशियों के मन फेरने का सन्देश दे सब शिष्यों को आनन्दित किया ।

यिरूशलीम की समाज में बहुत लोग आये । उन को छोड़ जो अन्ताकिया से आये थे पितर और याकूब और योहन आदि प्रेरित और यिरूशलीम की मंडली के प्राचीन भी वहां एकट्ठे हुए । जब बहुत बिवाद हुआ तब पितर ने खड़ा हो सभों से यह बर्णन किया कि बहुत दिन हुए ईश्वर ने उपाय किया था कि अन्यदेशियों को भी मंगल-समाचार सुनाया जाय । उस ने कहा कि अन्तर्यामी ईश्वर ने जैसा हम को तैसा उन को भी पवित्रात्मा देके उन के लिये साक्षी दिई और बिश्वास से उन्हों के मन को शुद्ध करके हमों के और उन्हों के बीच में कुछ भेद न रक्खा । और जिस रीति से वे उसी रीति से हम भी प्रभु योशु खीष्ट के अनुग्रह से चाण पाने का बिश्वास करते हैं । और कोई बात अवश्य न थी ।

तब सारी सभा चुप हुई और बरनबा और पावल की बातों को जो यह बताते थे कि ईश्वर ने उन के द्वारा कैसे बड़े चिन्ह और अद्भुत काम अन्यदेशियों के बीच में किये थे सुनती रही । तिस के पीछे याकूब खड़ा हुआ और बोला मेरा बिचार यह है कि अन्यदेशियों में से जो लोग ईश्वर की ओर फिरते हैं हम उन को दुःख न देवें परन्तु उन के पास यह लिख भेजें कि ब्यभिचार से और मूर्त्तिपूजा से और कई रीतों से जिन से यिहूदी लोग घिन करते हैं परे रहें ।

जब बिचार हो चुका तब समाज ने बरशबा और सीला

को जो भाइयों में बड़े थे पावल और बरनबा के संग अन्ताकिया को भेजा और उन के हाथ यह लिख भेजा कि यूनानी शिष्यों को मूसा की व्यवस्था की रीतों को मान्ना अवश्य नहीं है। जब यह पत्र अन्ताकिया को मंडली में पढ़ा गया तो उस शान्ति की बात से सब लोग आनन्दित हुए।

पर इस बात का बिवाद उस काल के ख्रीष्टियों में बहुत दिन लों होता रहा। जो यिहूदी होके शिष्य हो गये थे सो कई एक पूर्वकाल के व्यवहारों को मानते रहे और वे चाहते थे कि जो यूनानी होके शिष्य हो जायें सो हमारे समान इन्हीं व्यवहारों को मानें। सो जहां कहीं पावल प्रचारता जाता था वे भी उस के पीछे हो ले यह उपदेश देते थे कि जो कोई मूसा की आज्ञानुसार न चले सो निस्तार न पा सकेगा।

आज कल भी बहुत लोग व्यवहारों पर बहुत भरोसा रखते और सोचते हैं कि इस वा उस सांसारिक रीति बिना परलोक न बनेगा। उन रीतों को मान्ना जो अच्छी हैं उचित है पर जान लो कि यह मुक्ति का मार्ग नहीं है। मुक्ति केवल इसी से होती कि हम तन औ मन से प्रभु यीशु ख्रीष्ट पर बिश्वास करें। पर हां चाहिये कि सब जो प्रभु से त्राण पाते सो अपनी प्रीति के प्रगट करने के लिये सब बातों में केवल वही करें जिन से प्रभु प्रसन्न होगा।

पावल की धर्म्मप्रचारणार्थ दूसरी यात्रा।

कितने दिनों के पीछे पावल ने बरनबा से कहा कि जिन नगरों में हम ने प्रभु का बचन प्रचार किया आओ

हम हर एक नगर में फिरके अपने भाइयों को देख लेवें कि वे कैसे हैं । इस बात से बरनबा अति प्रसन्न हुआ और उस ने चाहा कि अपने भांजे योहन मार्क को संग ले । परन्तु पावल ने कहा सो नहीं क्योंकि पंफुलिया में वह काम पर हमारे संग न चला । बरनबा ने चाहा कि उस को फिर परीक्षा किई जाये परन्तु पावल ने सोचा कि इस में काम रुक जायेगा सो ऐसा टंटा हुआ कि वे जिन के बीच में बहुत दिन से ऐसी मित्रता हुई थी एक दूसरे को छोड़ गये ।

हम इन के बिवाद को अच्छा नहीं कहते हैं । जो उत्तम जन हैं उन से भी अपराध हुआ करते हैं । जगत भर में ऐसा कोई नहीं जो पाप न करता हो । इस लिये उचित है कि सब लोग चौकस रहें और प्रार्थना करते जायें कि पाप में न गिरें । पीछे यह दोनों जन इस भिन्नता से लज्जित हो फिर मित्र हो गये । चाहिये कि हम एक दूसरे के अपराधों को क्षमा करें जैसा कि हम चाहते कि खीष्ट के द्वारा ईश्वर हमारे अपराधों को भी क्षमा करे ।

परन्तु उन के बिवाद से एक फल यह हुआ कि दो यात्रा किई गईं । बरनबा योहन मार्क को संग ले जहाज पर कुपरस को गया । पावल ने सीला को चुन लिया और वे दोनों क्षुद्र आशिया में फिरकर बहुत स्थान के शिष्यों को स्थिर करते गये ।

लुस्त्रा में जहां पावल पत्थरवाह किया गया था तिमोथिय नाम एक शिष्य उसे मिला जो किसी बिश्वासी यिहूदिन का पुत्र था परन्तु उस का पिता यूनानी था । उस की माता उनीकी और उस की नानी लोइस अति ईश्वर भक्तिन थीं और वे तिमोथिय को बचपन से धर्म्म

पुस्तक का आदि भाग सिखाती रहीं । उस का दूसरा भाग जो सुसमाचार कहावता है इस के पीछे रचित हुआ ।

लुस्त्रा के भाई लोग तिमोथिय की सुख्याति करते थे और पावल ने चाहा कि उसे अपने संग ले जाय और इस कारण कि उस के प्रचारने से वह मसीही हो गया था उसे अपना प्यारा पुत्र भी कहता था ।



वे लड़के जो माता पिता से अच्छी शिक्षा पाते सो अति भाग्यवान हैं और तिमोथिय की नाईं अपने चाल चलन में इस अच्छी शिक्षा का फल दिखाना चाहिये तब उस के समान हम भी संसार में उपकारी होवेंगे ।

पावल और सीला और तिमोथिय उत्तर की ओर गलातिया देश में गये । उस के निवासी उस सन्तान के थे जो पूर्वकाल में गाल अर्थात फ्रांस देश में बास करते थे । पहिले तो उन्हों ने बड़े आनन्द से मंगलसमाचार को ग्रहण किया । उन का ऐसा उपकार था कि पावल

ने कहा मैं तुम्हारी साक्षी हूं कि जो हो सकता तो तुम अपनी अपनी आंखें निकालके मुझ को देते। परन्तु पीछे बहुतों की प्रीति कम हो गई ।

क्षुद्र आशिया के कई और देश थे जिन में प्रेरित लोग यात्रा करने चाहते थे परन्तु पवित्रात्मा ने उन्हें बर्जा । तब पच्छिम की ओर चल वे त्रोआ नगर में पहुंचे जो यूनानियों के पूर्वकाल के इतिहास में दस बरस की लड़ाई के कारण बहुत विख्यात था । इस बस्ती में लूका जो प्यारा वैद्य कहावता है और जिस की जान पहिचान पहिले अन्ताकिया में हुई थी उसे मिला और उस के संग चला ।

त्रोआ में खड़ा हो और पच्छिम की ओर दृष्टि कर पावल ने पहिले यूरप देश के पर्बतों को दूर से सागर पार देख लिया । रात को भी एक दर्शन उसे दिखाई दिया कि कोई माकिदोनी पुरुष खड़ा हो उस से बिन्ती करके कहता था कि इस पार आके हमारा उपकार कीजिये । यह पुरुष मानो यूरप देश था और उस की बुलाहट का कारण यह था कि यूरप के लोग मुक्तिदाता का सुसमाचार बिन पाये नाश होते जाते हैं । पावल ने दर्शन देख निश्चय जाना कि प्रभु ने हमें उन लोगों के तईं सुसमाचार सुनाने को बुलाया है सो तुरन्त माकिदोनिया को जाने चाहा ।

माकिदोनिया के लोग क्यों उपकार के लिये पुकारते थे । उन की यह बुरी दशा थी कि ईश्वर को न जानकर देवी देवताओं को मानते थे जिन से किसी का भला नहीं हो सकता है । हिन्दुस्तान में भी वैसे बहुत हैं और उन को भी सहायता का प्रयोजन है तो उचित है कि

हम शक्ति भर उन्हें सत्य शिक्षा दिया करें और उन के लिये प्रार्थना किया करें कि उन्हें इतना अनुग्रह मिले जिस्तें मिथ्या बातों को त्याग वे अपने स्वर्गीय पिता की ओर फिरें।

यूरप में पहिले सुसमाचार का सुनाना।

उस दर्शन देखने के पीछे सवेरे उठ पावल सीला और तिमोथिय ओ लूका को संग ले जहाज पर चढ़ माकिदोनिया की ओर सिधारा और दो दिन में वहां पहुंचा। पहिले नगर का जिस में वे प्रवेश करते थे फिलिपी नाम था जो सिकन्दर महाराज के पिता फिलिप के नाम से कहलाता था। यह नगर एक नदी के तीर पर बड़े चौगान में बना था इस में थोड़े यिहूदी लोग बास करते थे वहां उन का कोई सभागृह नहीं बना था परन्तु बस्ती के बाहर नदी के तीर पर एक स्थान था कि जिस में अधिक करके प्रार्थना किई जाती थी। उस सूने स्थान में लोग कम आते थे पर सच्चे परमेश्वर का भजन वहां हुआ करता था सो बिस्राम के दिन पावल और उस के संगी नगर के बाहर वहां नदी के तीर पर गये और बैठके उन स्त्रियों से जो एकट्ठी हुई थीं बात करने लगे। उस छोटे झुंड में लुदिया नाम थुआतीरा नगर की एक स्त्री थी। वह यहां अपने घर से ३५० मील इस लिये आई थी कि वह बैंजनी बस्त्र बेचनेहारी थी। यह एक बहुमूल्य रंग था जो एक प्रकार की मछली से निकाला जाता था और जिस से राजा लोगों के बस्त्र बहुत रंगे जाते थे।



ज्यों लुदिया चित्त लगाकर पावल के उपदेश को सुनती रही त्यों प्रभु ने उस का मन खोला कि उन बातों को ग्रहण करे। जब उस ने पहिली बार यह सुना कि ख्रीष्ट की मृत्यु के द्वारा हर एक बिश्वासी जन को पापमोक्षण और ईश्वर के साथ शान्ति मिलती है तो अति आनन्दित हुई और पावल से कहने लगी कि मुझे मसीही बपतिस्मा दीजिये क्योंकि मैं मसीह को मुक्तिदाता करके मानती हूं। तिस पर पावल ने उस को और उस के घराने को बपतिस्मा दिया।

लुदिया तो इस मुक्तिसन्देश के पाने से निपट धन्यवाद करती थी और न चाहती थी कि यह भाई लोग बाहरवालों में जा टिकें सो उस ने उन से बिन्ती किई कि यदि आप लोग मुझे प्रभु की बिश्वासिनी समझते हो तो मेरे घर में आके रहिये। पहिले तो वे न मानते थे पर पीछे को वह उन्हें बरबस ले गई।



यही पहिला मसीही धर्म्मोपदेश था जो यूरप में सुनाया गया और लुदिया यूरप में पहिली बिश्वासिनी हुई । कभी कभी हिन्दू लोग यह कहते हैं कि मसीही-धर्म्म को हम ग्रहण नहीं करते इस लिये कि वह यूरप से है पर उन का कहना भूल है क्योंकि वह धर्म्म पहिले इस महाद्वीप में था और पीछे से यूरप में फैल गया ।

पर ज्ञानवान यह नहीं पूछता कि यह धर्म्म किस देश से आया बरन यह पूछता है कि क्या वह सत्य है।

चाहे लोग मुक्ति का सन्देश भी सुनें तथापि जब लों ईश्वर उन के मनों को खोल न देवे तब लों वह उन को लाभजनक न होगा। जन्म से हम अपने मन के द्वार को ऐसा बंद कर रखते हैं कि सच्चाई भीतर प्रवेश नहीं कर सकती है सो जिस समय हम धर्म्मपुस्तक को पढ़ते अथवा पढ़ाते हैं यह प्रार्थना करनी उचित है कि हे ईश्वर हमारे हृदय को खोल दे जिस्तें हम तेरे बचन को ग्रहण करें।

एक बड़ा प्रश्न और उस का उत्तर।

फिलिपी नगर में पावल और उस के मित्र कुछ दिन लों सुख चैन से रहे तब एक क्लेश की बात उन को हुई। उस नगर में एक दासी थी जो अपने स्वामियों के लिये बहुत कमा लाती थी। उस भूत के कारण जो उस में लगा था वह अद्भुत बातों को बका करती थी। लोग समझते थे कि यह आगमज्ञानिनी है सो उस के द्वारा होनेहार बातों के बूझने के लिये वे बहुत रुपये दिया करते थे। जब दासी ने पावल और उस के संगियों को प्रार्थनास्थान को जाते हुए देखा तो बहुत दिन लों उन के पीछे पीछे चलके वह यह पुकारा करती थी कि ये मनुष्य परम ईश्वर के दास हैं जो तुम्हें मुक्ति का मार्ग बताते हैं। अन्त को पावल अति खेदित हो फिरा और उस भूत से कहा मैं यीशु ख्रीष्ट के नाम से तुझे आज्ञा देता हूं कि उस में से निकल आ और वह उसी घड़ी निकल आया।

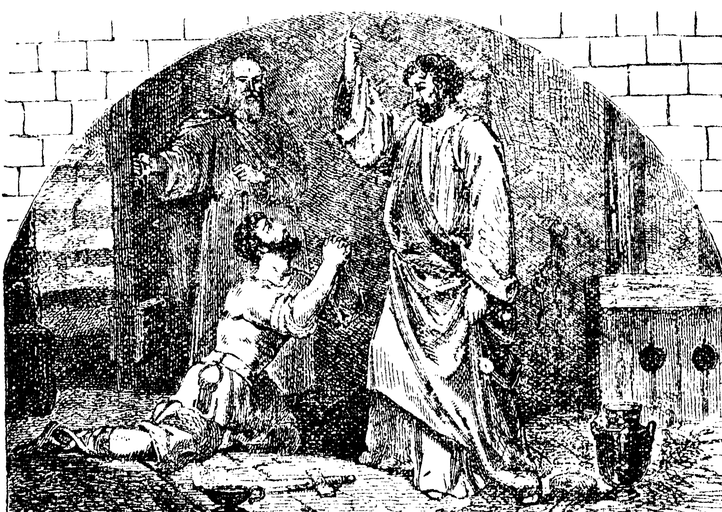


इस पर उस के स्वामी अति क्रोधित हुए क्योंकि सोचते थे कि फिर ऐसी अद्भुत बातें कि जिन से हम को धन मिले वह न सुनायेगी। वे पावल और सीला को पकड़के चौक में अध्यक्षों के पास खींच लाये और कहा कि ये मनुष्य जो यिहूदी हैं हमारे नगर के लोगों को व्याकुल करते हैं और ऐसे व्यवहारों को प्रचार करते हैं जिन्हें ग्रहण करना अथवा मान्ना हम को जो रोमी हैं उचित नहीं है। इस बात को सुन नगर के लोग भी उन के बिरुद्ध एकट्ठे चढ़ आये।

अध्यक्ष लोगों ने इस बात को कि ये लोग सत्य अथवा झूठ बोलते हैं निर्णय न कर तुरन्त मान लिया कि पावल और सीला बड़े पापी होंगे और लोगों के रिझाने के लिये उन्हों ने अपने कपड़े फाड़ डाले और उन्हें बेत मारने की आज्ञा दिई। यह उन का रोमियों से मार खाना पहिली बार था। यिहूदी लोग तो केवल उन्तालीस कोड़े मारते थे परन्तु रोमी लोग बेत से जितना चाहते उतना मारा करते थे।

मार खा और घायल हो पावल और सीला बन्दीगृह में डाले गये और बन्दीपाल को उन्हें चैाकसी से रखने की आज्ञा दिई गई। जैसा अध्यक्ष तैसा बन्दीपाल भी क्रूर था। भोजन न दे और उन की चोटों को न बांध उस ने उन्हें भीतर की कोठरी में डाला और उन के पांव काठ में ठोंके यहां लों कि वे न खड़े हो सके न लेट सके।

आधी रात को दूसरे बंधुओं ने सुना कि उस कोठरी से जहां पावल और सीला हैं शब्द निकलते हैं और यह नहीं कि रोने और बिलाप करने का शब्द क्योंकि वे ईश्वर का भजन करते थे। वे उस का धन्यबाद गाते थे कि मसीह के नाम पर उस ने हमें दुःख उठाने के योग्य ठहरा दिया जिस्तें अन्त को हम बड़े सुफल हो जायें।



गाते गाते अचानक ऐसा बड़ा भूंचाल हुआ कि बन्दीगृह की नेवें हिल गईं और तुरन्त सब द्वार खुल गये और सभों की बेड़ियां गिर गईं। भूंचाल के मारे बन्दीपाल

जाग उठा और द्वार को खुले देख समझा कि बंधुये भाग गये होंगे और इस विपत्ति के कारण मैं असावधान ठहरूंगा और घात किया जाऊंगा सो इस लज्जा से बचने के लिये उस ने खड्ग खींचा और अपने तईं मार डालने पर था परन्तु पावल ने उस पर दया कर बड़े शब्द से पुकारा कि अपनी कुछ हानि न कर क्योंकि हम सब यहां हैं।

तब बन्दीपाल दीपक मंगाके भीतर दौड़ा और कांपता हुआ पावल और सीला के पांव पड़ा और बोला हे महाशयो मुक्ति पाने को मुझे क्या करना चाहिये। उस ने यह नहीं पूछा कि मैं किस रीति भूंचाल से और मृत्यु से बचूं परन्तु मैं किस रीति अपने पापों से बचूं। प्रश्न तो बड़ा भारी था। इस से बढ़कर कौन हो सकता है। और उस का महाप्रभाव का उत्तर भी पावल ने दिया कि प्रभु यीशु पर बिश्वास कर तो तू और तेरा घराना मुक्ति पावेगा।

और उसी घड़ी रात को बन्दीपाल ने उन को लेके उन के घावों को धोया और ऊपर अपने घर में लाया और उन के आगे भोजन रक्खा। तब पावल ने उस को और उस के घराने को उपदेश कर उन्हें बपतिस्मा दिया और वे सब ईश्वर पर बिश्वास करके बड़ा आनन्द करने लगे।

अब सोचिये कि एक रात में उन की दशा कैसी बदल गई थी। वही बन्दीपाल जो कल क्रूर स्वभाव और मसीहियों का बैरी था आज सुशील और दयावान और नम्र मसीह का दास हो गया। उस में परमेश्वर का वह बचन पूरा हुआ कि यदि कोई मसीह में होय तो नई सृष्टि है। ईश्वर तो बड़े बड़े पापियों को भी बचाने

चाहता है यदि वे अपने अपराधों से पश्चात्ताप करते और मुक्तिदाता को ग्रहण करते तो वह बड़े आनन्द से उन को क्षमा करेगा। पर स्मरण करो कि निस्तार का केवल एक ही मार्ग हो सकता है। प्रभु यीशु को अपना मुक्तिदाता करके मानो तो उस के बलिदान के द्वारा तुम्हारा छुटकारा होगा और ईश्वर तुम्हारे मन में पवित्र आत्मा भेजके तुम्हें शुद्ध और स्वर्गबासी होने के योग्य बनावेगा। फिर आगे को तुम्हारे चालचलन से प्रगट होगा कि यह जो जन्म से ईश्वर के बैरी थे अब दूसरा जन्म पाने से उस के मित्र हो गये हैं।

पावल का थिसलोनिकी और बिरेया में चलना।

बिहान हुए अध्यक्षों ने प्यादों के हाथ बन्दीपाल को कहला भेजा कि उन मनुष्यों को छोड़ देओ। सो वह उन के पास आ बोला कि अध्यक्षों ने आप लोगों को छोड़ दिया सो अब निकलके कुशल से जाइये। परन्तु पावल ने कहा सो नहीं उन्हों ने हमें जो रोमी हैं बिन दंड के योग्य ठहराये लोगों के आगे मारा और बन्दीगृह में डाला और अब क्या हमें चुपके से निकाल देते हैं कभी नहीं परन्तु वे आप ही आके हमें बाहर ले चलें।

प्यादों ने ये बातें अध्यक्षों से कह दिईं और जब उन्हों ने यह सुना कि वे रोमी हैं तो डर गये और आके उन्हें मनाया और बाहर लाके बिन्ती किई कि नगर छोड़के चले जावें। तब वे लुदिया के यहां गये और उन्हों ने भाइयों को देखके उन्हें शान्ति और उपदेश दे चले गये।

तीन दिन की यात्रा कर पावल और सीला थिसलो-

निकी नाम एक बड़े नगर में जो सागर के निकट है आ पहुंचे वहां बहुत यिहूदी लोग रहते और उन के लिये सभा का घर भी बना था। पावल अपनी रीति के अनुसार उन के यहां गया और तीन बिस्रामवार उस घर में उन को धर्म्मपुस्तक की बातें सुनाईं। वह उन का अर्थ भी खोलता और समझाता रहा कि मसीह को दुःख भोगना और मृतकों में से जी उठना अवश्य था जैसा तुम्हारे भविष्यद्वक्ताओं ने पूर्वकाल में भी कहा कि यह यीशु जिस का मैं तुम से प्रचार करता हूं वही मसीह मुक्तिदाता है जिस की हमारे पुर्खे बाट जोहते थे।

यिहूदियों में से कितनों ने बिश्वास किया। फिर भक्त यूनानियों में से बहुत लोग और बहुत सी बड़ी बड़ी स्त्रियों ने भी मान लिया और देवी देवताओं को छोड़ ईश्वर को भजने लगीं। परन्तु न मान्नेहारे यिहूदियों ने डाह से भरके बाजारू लोगों में से कितने लुच्चों को अपने साथ लिया और भीड़ लगाके नगर में हुल्लड़ मचाया और यासोन नाम एक शिष्य के घर पर चढ़ाई करके प्रेरितों को ढूंढ़ने लगे। जब उन्हें न पा सके तब वे यासोन और कितने भाइयों को पकड़कर यह पुकारते हुए उन्हें अध्यक्षों के आगे खींच ले आये कि ये लोग जिन्हों ने जगत को उलट दिया यहां भी आये हैं और उन्हें यासोन ने अपने घर में उतारा है और ये सब कैसर की अर्थात रोमी महाराजा की आज्ञाओं का बिरोध करके कहते हैं कि राजा दूसरा है अर्थात यीशु। अध्यक्ष और नगर के भले मनुष्य इस हुल्लड़ के कारण बहुत घबरा गये और उन्हों ने यासोन और दूसरों से मुचलका लेके उन्हें छोड़ दिया। तब भाइयों ने यह बिचार कर

कि यदि पावल और सीला यहां ठहरें तो किसी दुष्ट से घात किये जायेंगे तुरन्त रात को उन्हें बिरेया नगर में भेज दिया। बहुत दिन पीछे पावल ने दो पत्रियां थिसलोनिकी नगर के मसीहियों के पास भेजीं।

जब पावल और सीला बिरेया में पहुंचे तो पहिले यिहूदियों की सभा के घर में गये पर वहां के लोग थिसलोनिकी के लोगों से उत्तम थे क्योंकि उन्हों ने बड़े आनन्द से बचन को ग्रहण किया और प्रतिदिन धर्म्म-पुस्तक में ढूंढ़ते रहे कि ये बातें जिन्हें प्रेरित लोग प्रचारते हैं सो यों ही हैं कि नहीं। सो उन में से बहुतों ने बिश्वास किया। बिरेया के लोग इस बात में अच्छा निदर्शन देते हैं और चाहिये कि हम भी उन के समान न केवल मुक्ति का सुसमाचार सुनें बरन ईश्वर की धर्म्म-पुस्तक को अपने लिये यों प्रार्थना कर पढ़ा करें कि हे ईश्वर पवित्रात्मा के द्वारा हमारे मन की आंखों को खोल दीजिये जिस्तें मैं सत्य मार्ग को देखूं।



बिरेया के शिष्य।

इस स्थान में भी पावल बहुत बेर लों ठहर न सका क्योंकि जब यिहूदियों ने जो थिसलोनिकी में उस के बैरी थे जाना कि पावल बिरैया में ईश्वर का बचन प्रचार करता है तब वे वहां भी आके लोगों को उसकाने लगे। तब भाइयों ने तुरन्त पावल को बिदा किया कि वह समुद्र की ओर जावे जहां से जहाज पर चढ़के चला गया पर सीला और तिमोथिय वहां रह गये जिस्तें उस बस्ती के लोगों को मसीह के विषय अधिक सिखावें।

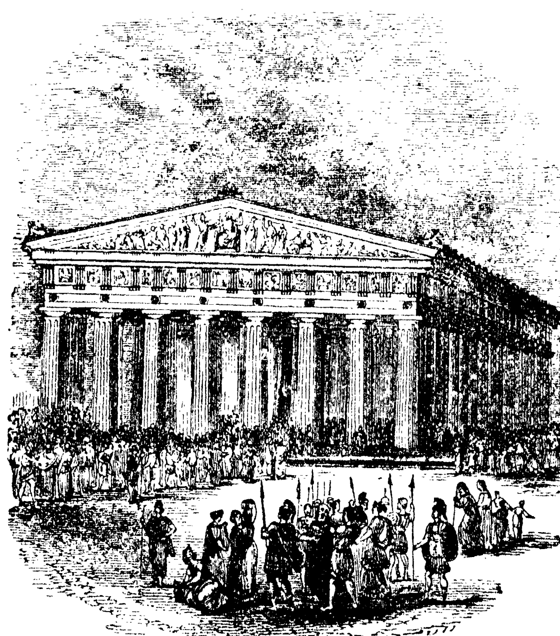
उन यिहूदियों की कैसी बड़ी दुष्टता थी कि वे न तो आप यीशु मुक्तिदाता को मान लेते और उन सभों को जो उस के शिष्य होने चाहते रोक देते थे।

पावल का आथीनी में पहुंचना।

आथीनी नगर यूरप की दक्खिन में और समुद्र से तीन मील दूर है वह एक चौगान पर जिस में चार छोटी पहाड़ियां थीं बना था। इन पहाड़ियों में से एक अक्रापोलिस अर्थात नगर का गढ़ कहावती थी और वह बहुत ढालू और अड़बड़ और पत्थरीली थी और दूर से दिखाती थी। उस की चोटी पर आथीनी नाम देवी का एक मन्दिर श्वेत संगमर्मर का बना था जिस की सुन्दरता जगत भर में विख्यात है। इस नगर के लोग आथीनी को अपनी मुख्य देवी और देशपालक समझते थे। उस की मूर्त्ति बहुत ही बड़ी और रूपवान सोने और हाथीदांत की बनी थी और सब कोई उस के बहुत गुण गाते थे। अक्रापोलिस से थोड़ी दूर पर मार्स की पहाड़ी थी जिस पर न्यायाधीश बड़ी बड़ी बातों के निर्णय करने केलिये एकट्ठे हुआ करते थे। इन पहाड़ियों के चहुं

ओर बहुत से घर और मन्दिर उद्योगस्थान आदि इधर उधर चैागान में थे और बहुत सी संगमर्मर की बनी हुई प्रतिमायें भी देखने में आती थीं ।

आथीनी नगर के आलसी जन बहुत प्रसिद्ध हुए क्योंकि बस्ती के लोग और परदेशी भी जो वहां रहते थे सो किसी और काम में नहीं केवल नई नई बात के कहने अथवा सुन्ने में अपना समय काटते थे । आवागमन का विशेष स्थान चैाक में था जिस की चारों ओर बड़े बड़े देवालय और डेवढ़ी बनी थी जिस की छाया में लोग फिरा करते और नाना प्रकार के ज्ञान का वादविवाद करते थे । मिलटन काव्यकर्त्ता ने कहा है कि आथीनी नगर को



आथीनी का विशेष मन्दिर ।

यूनान देश की आंख की पुतली और विद्याओं और सतवकृता की माता कहना चाहिये ।

पावल आथीनी में अकेला हो भाइयों की बाट जोहता था। वह नगर की गली गली फिरता और समस्त रंगभूमि को देखा करता था इतनी मूर्त्ति और मन्दिर देख वह निपट अचंभित हुआ और उस का मन उन लोगों की मिथ्याभक्ति देख भीतर से उभर आया। यह देखकर कि मनुष्य अपने सृजनहार और पालनहार को भूल अपने हाथ की क्रिया को ईश्वर की स्तुति और महिमा दिया करते हैं वह बहुत शोकित हुआ।

पहिले वह उन थोड़े यिहूदियों के पास गया जो नगर में रहते थे और उन की सभा में मंगलसमाचार सुनाता था पर विशेष करके प्रतिदिन चौक में जाया करता और उन सब से जो उस की बातें सुन्ने चाहते उपदेश देता था। दो प्रकार के ज्ञानी लोग उसे बहुत मिलते थे क्योंकि उन के विद्यालय आथीनी बस्ती में थे।



मिनरवा आथीनी की इष्ट देवी।

एक प्रकार के पंडित इपिकूरिय थे सो इपिकूरस नाम एक बड़े गुरु से जो उस समय से तीन सौ बरस आगे प्रसिद्ध हुआ कहावते थे । गुरु ने यह सिखाया था कि पृथिवी किसी सृजनहार से सृजी न गई परन्तु परिमाणुओं के अकस्मात एकट्ठा होने से आप से आप बन गई है । वह यह भी कहता था कि मनुष्य के लिये कोई बात इस से उत्तम नहीं है कि हम रात दिन सुख भोगें । परन्तु इपिकूरस के चेले उस से अधिक बुरी शिक्षा देते थे क्योंकि उस के पीछे उन में यह कहावत थी कि खावें पीवें क्योंकि कल ही मर जायेंगे ।

स्तोइकीय दूसरे प्रकार के पंडित थे । जीनों नाम उन का आदि गुरु एक स्तोआ अर्थात एक डेवढ़ी में उपदेश देता था इस कारण वे स्तोइकीय कहावते थे । वे यह सिखाते थे कि साधुशीलता सब से उत्तम बात है और वे योगियों की नाईं सुख दुःख दोनों को एक ही समझते थे परन्तु सत्य कहूं तो उन में बहुत कपटी और बड़े कुकर्म्मी होते थे और बहुत लोग बेचैन हो अपने तईं घात कर देते थे ।

पावल चौक में जा इन पंडितों से उन ज्ञान की बातों में जिन के ध्यान में वे लोग लगे रहते थे बिवाद न करता था परन्तु उन को यीशु का और जी उठने का सुसमाचार सुनाता था । भीड़ तो सुन्नै चाहती थी परन्तु कुछ गम्भीरता से नहीं क्योंकि कितने बोले यह बकवादी क्या कहने चाहता है पर औरों ने कहा वह अन्य देवताओं का प्रचारक जान पड़ता है । जब उस ने आनस्तासिस अर्थात जी उठने की चर्चा किई तो वे सोचते थे कि यह कोई नई देवी का नाम होगा और कि पावल कोई नये



पावल का आथीनी में उपदेश करना।

धर्म्म को स्थापन किया चाहता है। परन्तु चौक में हुल्लड़ अधिक था यहां लों कि वहां बातें करना कठिन था सो पावल को लेके वे एकान्त में मार्स की पहाड़ी पर गये।

उस सीढ़ी से जो चौक के पास से चटान में कटी हुई थी वे अरेयोपाग अर्थात मार्स की पहाड़ी की चोटी पर ऐसे चौरस स्थान में गये जहां चैन से बैठ सकते थे। यों ही कोई बैठ कोई खड़ा हो वे उसे घेर लेते थे और उस से बोले कि क्या हम जान सकते हैं कि यह नया उपदेश जो तू देता है क्या है। क्योंकि तू अनूठी बातें हमें सुनाता है। इन का अर्थ क्या है।

पावल खड़ा हो और चारों ओर के बड़े बड़े मन्दिरों और समीप के लोगों पर दृष्टि कर बोला।

हे आथीनीय लोगो मैं तुम्हें सर्व्वथा देवताओं के बड़े भक्त देखता हूं। क्योंकि फिरते हुए और तुम्हारी पूज्य

वस्तुओं को देखते हुए मैं ने एक बेदी भी पाई जिस पर यह लिखा हुआ था कि अनजाने ईश्वर के लिये। सो जिसे तुम बिन जाने पूजते हो उसी को मैं तुम्हें प्रचारता हूं। ईश्वर जिस ने जगत को और सब कुछ जो उस में है बनाया वह आकाश और पृथिवी का स्वामी होके हाथ के बनाये हुए मन्दिरों में बास नहीं करता और न वह मनुष्यों के हाथों से सेवा लेता है कि मानो उस को किसी वस्तु का प्रयोजन है क्योंकि वह आप ही सभों को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है और उस ने एक ही से मनुष्यों की प्रत्येक जाति को सारी पृथिवी पर बसने के लिये बनाया और उन के प्रतिनियत समयों और निवास के सिवानों को ठहराया कि वे ईश्वर को ढूंढें क्या जानें उसे टटोलके पावें यद्यपि वह हम में से किसी से दूर नहीं है क्योंकि उसी में हम जीते और चलते फिरते और बने रहते हैं जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है कि हम तो उस के सन्तान हैं। सो ईश्वर के सन्तान होके हमें उचित नहीं है कि यह समझें कि ईश्वरत्व सोने अथवा रूपे अथवा पत्थर के समान है जो मनुष्य की हथौटी और कल्पना से गढ़ा हुआ है। सो ईश्वर ने अज्ञानता के समयों से आनाकानी किई पर अब सर्व्वत्र सब मनुष्यों को पश्चात्ताप करने की आज्ञा देता है क्योंकि उस ने एक दिन ठहराया है जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा जिसे उस ने नियुक्त किया है न्याय से जगत का बिचार करेगा और उस ने उस मनुष्य को मृतकों में से उठाके यह बात सभों को निश्चित कराई है।

यह उपदेश अति सुन्ने के योग्य था। पावल बड़ी सुशीलता के साथ उन लोगों से बातें करता था। वह

मान लेता था कि हां तुम लोग देवताओं के बड़े पुजेरी हो परन्तु तुम आप जानते हो कि एक अनजाना ईश्वर है और तुम ने उस के लिये एक बेदी बनाई। यह अनजाने ईश्वर ही का प्रचार पावल करता था। उस बड़े मन्दिर की ओर आंख फेरकर जो आज लों पारथेनोन् नाम से विख्यात है उस ने उन्हें कहा कि ईश्वर स्वर्ग और पृथिवी का प्रभु होके हाथ के बनाये हुए मन्दिरों में बास नहीं करता है। सब बस्तुन का सृजनहार हो उस को किसी बात की कमी नहीं परन्तु केवल इस कारण मनुष्यों से सेवा लेता है जिस्तें हम अधिक उस को प्यार करें।

आथीनी लोग कहते थे कि हमारे पुर्खे और लोगों की नाईं नहीं हैं परन्तु भूमि से जन्मे। पर इस के बिरुद्ध पावल ने उन को यह शिक्षा दिई कि सकल जगत के लोग एक ही प्रकार से ईश्वर के हाथ से बनाये गये हैं और जाति का अभिमान मिथ्या है। यदि कोई ईश्वर को न पहिचाने तो भूल उसी की है क्योंकि उस ने मनुष्य को उसे ढूंढ़ने की शक्ति दिई है अरु और दोष उन्हीं का है जो अंधियारे में टटोलकर उसे नहीं पाते। फिर पावल ने उन्हें समझाया कि यह कुछ नई बात नहीं है क्योंकि तुम्हारे एक नामी कवि ने यह भी कहा है कि हम तो ईश्वर के बंश हैं।

आथीनी लोग अपने देवताओं की अति सुन्दर प्रतिमाओं पर जिन्हें नामी कारीगरों ने गढ़ा था बहुत फूलते थे कि हमारे देवता बड़ी शोभा के साथ हमारे बीच में रहते हैं परन्तु पावल ने उन्हें समझाया कि ईश्वर जो परमात्मा है सो ऐसी कल्पना की गढ़ी हुई मूर्त्तों के समान कभी नहीं हो सकता है। वह हम सभों का

स्वर्गीय पिता है और हम सब उस के हाथ की कारीगरी हो आपस में भाई हैं।

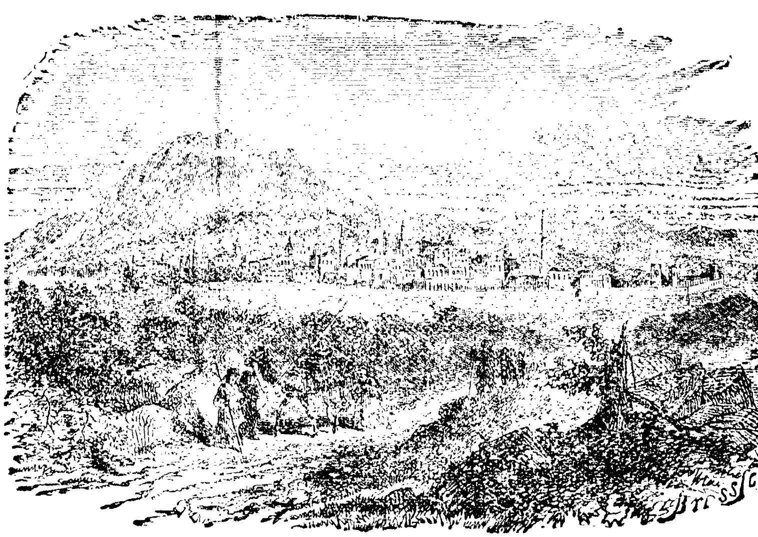
पूर्वकाल में जब मनुष्य को ईश्वर का ज्ञान कम मिलता था तब जो कुछ उन्हों ने अपनी अज्ञानता से बुराई किई ईश्वर उस से आनाकानी करता था परन्तु अभी सर्व्वत्र सब मनुष्यों को पश्चात्ताप करने की आज्ञा देता है। न केवल यह परन्तु एक महाबिचार का दिन ईश्वर का ठहराया हुआ आनेवाला है कि जिस में सब जो मर चुके हैं सो जी उठके अपने जीवन भर के कामों का हिसाब देंगे। और प्रगट हो कि वही प्रभु जो न्याय के सिंहासन पर उस दिन बैठेगा सो वही प्रभु है जो अभी पापियों को यह कहके बुलाता है कि पाप को छोड़कर मेरे चेले बनो और मैं तुम्हारा निस्तार करूंगा।

पावल के मुंह से मृतकों के जी उठने की बात सुनके बहुत लोग हंसी ठट्ठा करने लगे और बहुत लोग शिष्टता का बहाना कर बोले हम इस के विषय में तुझ से फिर सुनेंगे। परन्तु कई एक ने उन में से बिश्वास किया और उस से मिल गये। और उन में दियोनुसिय नाम एक न्यायकर्त्ता और दामरी नाम एक स्त्री और उन के संग कितने और लोग थे। ऐसे नगर में जहां झूठे ज्ञानों के बड़े बड़े पंडित और झूठे देवताओं की इतनी बड़ी पूजा हुआ करती थी तहां सब मिथ्या बातों को त्याग ईश्वर की ओर फिरना निःसन्देह अति कठिन था तथापि यह थोड़े लोगों ने सत्य के खोजी हो ईश्वर से अनुग्रह पा अपने देश की रीति को छोड़ दिया और सत्य शिष्य हुए। पावल ने फिर आथीनी में प्रवेश नहीं किया परन्तु उस समय से उस बस्ती में एक मसीही

मंडली होने लगी और पीछे उस में कई एक बड़े बड़े ज्ञानवान पंडित पाये गये। आथीनी का मन्दिर मसीही सभा का घर हो गया कि जिस में ईश्वर सर्बशक्तिमान और सर्बब्यापी माना जाता था और आजकल मार्स की पहाड़ी पर एक गिर्जाघर बना है जो कि दियोनुसिय नाम से कहावता है।

वह बड़ा अदलबदल जो उस समय से यूरप में होने लगा सो आजकल हिन्दुस्तान में होने लगा है। वह दिन आता है कि जिस मे उस के जितने सन्तान हैं एक दूसरे को भाई जानकर एक ही ईश्वर को भजेंगे और उस को अपना स्वर्गीय पिता कहके उस से प्रार्थना करेंगे।

पावल का करिन्थ में जाना।



करिन्थ का चित्र।

तिस के पीछे पावल आथीनी से निकलके करिन्थ में

आया। यह नगर अति भरापुरा और धनी और यूनान देश की राजधानी था। वह संयोगभूमि में अर्थात दो समुद्र के बीच में बना था और आने जानेवालों के कारण से वहां बहुत सम्पत्ति एकट्ठी होती थी। वहां के निवासी बड़े विषयी और भोगबिलास के चाहनेहारे थे और उन के यहां वीनस देवी का एक अति कीर्तिमान मन्दिर था जिस में बहुत सी पुरोहितिन हिन्दुस्तान की देवीदासियों की नाईं बड़ी दुराचारिन रहती थीं।

करिन्थ में पावल अकूला नाम एक यिहूदी के घर में टिका था रोम के महाराजा क्लौदिय ने सब यिहूदियों को रोम से निकल जाने की आज्ञा दिई थी इस लिये कि वे बार बार दंगा मचाते थे सो अकूला अपनी पत्नी प्रिस्कीला को साथ ले इतालिया देश से वहां आ रहा। उन के यहां टिकने का एक कारण यह था कि यह भी पावल की नाईं तम्बू बनानेवाला था। सो एक ही उद्यम के होकर वे एक संग परिश्रम कर रोटी कमाते थे। उस ने यह अच्छा किया क्योंकि हाथ पांव रखकर संत का भोजन खाना उत्तम नहीं है। उस ने आप आज्ञा भी दिई कि यदि कोई कमाने नहीं चाहता है तो भोजन भी न करे। उस ने अकूला और प्रिस्कीला को प्रभु यीशु की अद्भुत कथा सुनाई और वे भी उस मुक्तिदाता के चेले हुए और जीवन भर पावल के बड़े मित्र रहे।

हर बिस्रामवार को पावल सभा के घर में जाता और यिहूदियों को यह समझाता था कि यीशु मसीह वह मुक्तिदाता है जिस के आने का सन्देश पूर्वकाल से दिया गया था और जिस की पुर्खे लोग बाट जोहते थे। वह यूनानियों को भी सुसमाचार सुनाता था। तीन

महीने के पीछे वह सीला और तिमोथिय के वहां आने से अति मगन हुआ और अधिक दृढ़ता से यिहूदियों से विवाद करने लगा।

तिस पर यिहूदी लोग क्रोधित हो यीशु के नाम पर ऐसी निन्दा करने लगे कि पावल उसे सह न सका और अपने कपड़े झाड़के बोला तुम्हारा लोहू तुम्हारे ही सिर पर होय मैं निर्दोष हूं अब से मैं अन्यदेशियों के पास जाऊंगा। सभा को छोड़ वह जुस्तुस नाम ईश्वर के एक भक्त के घर में आया क्योंकि वह समीप था। वहां उपदेश दे बहुत लोग सुनकर बिश्वास करते और बपतिस्मा लेते थे उन में क्रिस्पुस नाम सभा का अध्यक्ष था जो अपने सारे घराने समेत शिष्य हुआ।

मसीही मंडली की बढ़ती देख अधर्म्मी यिहूदी लोग डाह से भरके यहां लों दंगा मचाते थे कि पावल यह



पावल का स्वप्न।

सोच कि इन के उपद्रव से बचना कठिन होगा अति

व्याकुल हुआ परन्तु प्रभु ने रात को दर्शन के द्वारा उस से कहा मत डर परन्तु कहता जा और चुप मत रह क्योंकि मैं तेरे संग हूं और कोई तुझ पर चढ़ाई न करेगा कि तुझे मार डाले क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत लोग हैं। यों पावल को दिलासा दिया गया और दृढ़ हो डेढ़ बरस और वह ईश्वर का बचन उन्हें सिखाता रहा।

बहुत दिन के पीछे गालिओ नाम अखाया देश का अध्यक्ष करिन्थ में आ रहा। सो यिहूदी लोगों ने एक चित्त होकर पावल को पकड़ लिया और उसे न्यायासन के आगे पहुंचाया। गाल्लिओ ने पूछा कि क्यों उस ने क्या अपराध किया। यिहूदी बोले कि यह बुरी रीति से हमें ईश्वर की उपासना करने को समझाता है। ज्यों ही पावल अपने निवेदन करने के लिये मुंह खोलने पर था त्यों ही गाल्लिओ ने यिहूदियों से कहा कि यदि यह अन्याय अथवा दुष्टता की बात होती तो उचित था कि मैं उस का बिचार करता परन्तु इस बिवाद को जो तुम्हारे धर्म्म के विषय में है मैं न सुनूंगा। और उस ने उन्हें न्यायासन के आगे से निकाल दिया। तिस पर क्रोधित हो यिहूदियों ने सोस्थिनी नाम सभा के अध्यक्ष को पकड़के उसे न्यायासन ही के साम्हने मारा। पर गाल्लिओ ने इन बातों की कुछ चिन्ता न किई।

तिस के एक महीना पीछे पावल भाइयों से बिदा होके जहाज पर चढ़ सुरिया देश को गया। जब पीछे से दो पत्रियों को करिन्थ के शिष्यों को लिख भेजा तब दूसरी पत्री के अन्त में यह शिक्षा थी कि आनन्दित रहो सुधर जाओ शान्ति होओ एक ही मन रखो मिले रहो और प्रेम और शान्ति का ईश्वर तुम्हारे संग होगा।

पावल की धर्म्म प्रचारणार्थ तीसरी यात्रा।

अन्तैखिया में कई दिन लों रहके पावल तीसरी बार दूर दूर देशों में उपदेश करने के लिये सिधारा। तीतुस नाम एक जवान जो यूनानी हो पावल की शिक्षा से शिष्य हो गया था उस के संग चला। फिर कई नगर में जहां पहिले उपदेश दिया था जाकर और भाइयों के बिश्वास को दृढ़ कर कर इफिसुस में आये।

इफिसुस एक बड़ा नगर समुद्र के समीप क्षुद्र आशिया के पच्छिम में बना है। वहां का बड़ा मन्दिर जो अर्तिमिस देवी के नाम पर बना था सो जगत भर की सात बड़ी अद्भुत बस्तुन में गिना जाता था। कहते हैं कि वह २२० बरस में बना था। उस के भीतर १२७ संगमर्मर के बने हुए खम्भे थे जो साठ फुट ऊंचे थे और एक एक किसी राजा का प्रदान था उस की छत को उठा रहे थे। वहां की मूर्त्ति केवल काठ का एक कुडौल कुन्दा था कि जिस में बहुत सी चूंचियां बनी थीं और सिर पर सोने का मुकुट धरा था। पुरोहित यह बहाना करते थे कि यह मूर्त्ति स्वर्ग से अर्थात जूपिटर देवताओं के पिता के यहां से गिरी। दिआना कुछ हिन्दू लोगों की शक्ति देवी सी समझी जाती थी और उस की पूजा भी कुछ उस के तुल्य थी। इफिसुस के लोग आधे यूनानी आधे आसिया के होते थे।

तीन मास लों पावल यिहूदियों की सभा के घर में प्रवेश करके साहस से बात करता रहा और ईश्वर के राज्य के विषय में लोगों को समझाता रहा कि मसीह मुक्तिदाता है। परन्तु अबिश्वासियों में से कितनों ने

कठोर होके नहीं माना और लोगों के आगे उस निस्तार के मार्ग को जिसे वह प्रचारता था निन्दा करने लगे। इस लिये पावल उन के पास से चला गया और तुरीन्नुस नाम एक मनुष्य के विद्यालय में उपदेश देने लगा। यह शिक्षा दो बरस लों होती रही यहां तक कि इफिसुस के सब लोग और समीप के निवासी यिहूदियों और यूनानियों ने प्रभु का बचन सुना। और इस बात के स्पष्ट करने के लिये कि वह अपना नहीं बरन ईश्वर का बचन लेके आया है ईश्वर ने पावल को सामर्थ्य दिई कि उस के हाथ से बहुत से अनोखे आश्चर्य्य कर्म्म किये गये। वह न केवल बीमारों को चंगा करता परन्तु जब अंगोछे और रूमाल जिन्हें उस ने छुआ था रोगियों के पास पहुंचाये जाते थे तब रोग उन से जाते रहते थे और दुष्ट भूत भी उन में से निकल जाते थे।

तिस पर उन अबिश्वासी यिहूदियों में से जो इफिसुस में रहते थे कितने जन यह बहाना करने लगे कि हम भी आश्चर्य्य कर्म्म कर सकते हैं। इन में स्कीवा नाम किसी यिहूदी महायाजक के सात पुत्र थे जो यही करते थे। एक मनुष्य के पास जा जिस को अति दुष्ट भूत लगा था और उस पर खड़ा हो प्रभु यीशु का नाम यह लेके बोले कि यीशु जिसे पावल प्रचार करता है हम उसी की तुम्हें किरिया देते हैं। परन्तु दुष्ट भूत ने नहीं माना बरन उत्तर दिया कि यीशु को मैं जानता हूं और पावल को पहचानता हूं पर तुम कौन हो। यह कह वह उन पर लपकके और उन्हें बश में लाके उन पर ऐसा प्रबल हुआ कि वे नंगे और घायल हो उस घर से निकल भागे। जब यह बृत्तान्त नगर में प्रसिद्ध हुआ तब लोग डरने लगे

और प्रभु यीशु के नाम की बड़ाई करने लगे जिस के द्वारा ऐसे अद्भुत काम किये गये थे।

परन्तु इफिसुस नगर में बहुतेरे और झाड़फूंक करनेहारे और टोना करनेहारे रहते थे। वे लोगों को यह समझाते थे कि इफिसी अक्षरों के अपने पास रखने से अर्थात उन अक्षरों के जो देवी की मूर्त्ति पर थे प्रतिलिपि कर अपने पास रखने से तुम भूतों और रोगों और नाना प्रकार के दुःखों से बचोगे। इन टोटका करनेवालों में से बहुतों ने पावल के पास आ अपने धोखे के कार्य्यों को मान लिया और अपने मंत्रों की पोथियां एकट्ठी करके गली में सभों के साम्हने जला दिईं। वे उन को बेच न सकते थे न हो कि और कोई उन के द्वारा लोगों को ठगें। यदि बिकतीं तो उन का दाम पचास सहस्र रुपये होता। इसी से जाना जाता कि उन का जादू से फिरना सत्य था और कि वे अपनी अगली दुष्टता से लज्जित हुए। सत्य पश्चात्ताप यह है कि हम न केवल अपने अपराधों को बुरा मानें बरन उन को छोड़ें भी इन पोथियों को जलते देख बहुत और लोग बिश्वास करने लगे कि यीशु वही तारनहार है।

हिन्दुस्तान में भी बहुतेरे टोन्हा और छली लोग हैं जो झाड़फूंक और मंत्र पढ़कर अनपढ़ों को धोखा दे पैसे कमाते हैं। उचित है कि यह सब इफिसुस के जादू करनेहारों की नाईं अपनी कपट की सामग्री को जलाकर किसी अच्छे उद्यम से रोटी कमावें।

सुनारों का हुल्लड़ मचाना ।



अर्तिमिस देवी के नाम पर इफिसुस में बरस बरस एक बड़ा मेला हुआ करता था जिस में बहुत अन्यदेशी भी आ उस की पूजा करते थे । इन परदेशियों का यह व्यवहार था कि चांदी की बनी हुई मन्दिर की छोटी छोटी मूर्त्तों को मोल ले अपने घर को ले जाते थे । वे सोचते थे कि देवी की प्रतिमा जो इन के भीतर बैठी है सो हमारी रक्षा और हमारे काम को सुफल कर देगी । सो इन प्रतिमाओं के बनाने से नगर के सुनारों को बहुत काम मिला करता था ।

देमेत्रीयुस नाम एक धनी सुनार ने बिचार किया कि अब लोग पावल की शिक्षा से देवी देवताओं को त्याग ईश्वर की ओर जो फिरते हैं तो निश्चय मूर्त्तें कम बिकेंगीं और हमारे काम की हानि होगी सो पावल के उपदेश को

रोकने के लिये उस ने नगर के सुनारों को एकट्ठा कर उन से कहा कि हे मनुष्यो तुम जानते हो कि इस काम से हम को सम्पत्ति प्राप्त होती है और तुम देखते और सुनते हो कि इस पावल ने यह कहके कि जो हाथों से बनाये जाते सो ईश्वर नहीं हैं सो समस्त लोगों को समझाके भरमाया है। तिस का फल यह होगा कि लोग हमारी कारीगरी को मोल न लेंगे और अर्तिमिस को तुच्छ जानेंगे।

सुनार लोग यह सुनके क्रोध से भर गये और चिल्लाने लगे कि इफिसियों की अर्तिमिस की जय। सारे नगर में बड़ा रौला मचा लोग यह समझते थे कि यह सब गड़-बड़ाहट पावल के कारण हुई सो उन में से कितने अकुला के घर उस को ढूंढ़ने के लिये गये और उसे न पाकर दो उस के संगी पथिकों को पकड़के रंगशाला में जहां भीड़ हुआ करती थी दौड़ गये। शीघ्र बड़ी भीड़ वहां लग गई। पावल ने भी रंगशाला में जाने चाहा परन्तु शिष्यों ने उसे रोक रक्खा न हो कि भीड़ उसे घात करे।

रंगशाला में भीड़ की बड़ी व्याकुलता रही कोई कुछ पुकारता था और कोई कुछ और अधिक लोग नहीं जानते थे कि हम किस लिये एकट्ठे हुए हैं। सिकन्दर नाम एक यिहूदी हाथ से सैन करके लोगों को चुप किया चाहता था जिस्तें कुछ कहे परन्तु उसे यिहूदी जानके वे उस की न सुनते परन्तु और भी चिल्लाते थे कि इफिसियों की अर्तिमिस की जय।

जब दो घड़ी के अटकल यों चिल्ला चिल्लाकर थक गये तब नगर के लेखक ने लोगों को धीमा करके कहा कि हे इफिसी लोगो कौन मनुष्य है जो नहीं जानता कि

इफिसियों का नगर बड़ी देवी अर्तिमिस का और उस की स्वर्ग से गिरी हुई मूर्त्ति का सेवक है सो क्या प्रयोजन है कि इस बात को चिल्लाते रहें जब सब कोई जानते हैं सो उचित है कि तुम चुपके रहो और कोई काम उतावली से न करो। वे मनुष्य जिन की निन्दा तुम करते हो वे तुम्हारा कुछ बुरा नहीं करते हैं। सो यदि देमेत्रीयुस को और उस के संग के कारीगरों को किसी से बिवाद है तो कचहरी खुली है और अध्यक्ष भी हैं न्याय के द्वारा बात को निर्णय करना चाहिये क्योंकि जो आज बलवा हुआ है उस के हेतु से हम पर दोष लगने का डर है न हम इस भीड़ के एकट्ठे होने का कोई कारण बता सकें।

यह कह लेखक ने समझा समझा लोगों को बिदा किया। जब हुल्लड़ थम गया तब पावल शिष्यों को अपने पास बुलाके और उन्हें उपदेश देके चल निकला और यों उस का तीन बरस का काम इफिसुस में पूरा हुआ और वह दूसरी मंडलियों को देखने के लिये गया।

यदि तुम धर्म्मपुस्तक को पढ़ोगे तो उस में पावल की अति श्रेष्ठ पत्री मिलेगी जिसे रोम नगर के बन्दीगृह में लिखकर उस ने इफिसुस के शिष्यों के पास भेज दिया। उस में यह लिखा है कि मैं तुम्हारे लिये धन्य मान्ना नहीं छोड़ता हूं क्योंकि तुम आगे अंधकार थे पर अब प्रभु में उजियाले हो। सो उचित है कि अपने दुष्कर्म्मों को छोड़के तुम ज्योति के सन्तानों की नाईं चलो।

आजकल जगत भर में अर्तिमिस देवी का अथवा उस मूर्त्ति का जिस को स्वर्ग से गिरी हुई समझते थे एक भी पुजारी न होगा। हिन्दुस्तान के देवताओं की यही दशा

आनेवाली है। वे संसार से मिट जायेंगे। ईश्वर ने कहा है कि जिन देवों ने स्वर्ग और पृथिवी को नहीं बनाया वे पृथिवी पर से और स्वर्गों के तले से नष्ट होंगे।

निद्राग्रस्त सुन्नेहारे का वृत्तान्त।



मुर्दे सुन्नेहारे का फिर जी उठना।

पावल फिलिपी और करिन्थ आदि के शिष्यों से भेंट कर फिर त्रोआस में पहुंचा और वहां सात दिन रहा। अठवारे के पहिले दिन अर्थात रविवार की सांझ को वहां के शिष्य लोग पावल के उपदेश सुन्ने को एकट्ठे हुए। दूसरे दिन पावल और उस के संगी चलनेवाले थे सो वह जाने से पहिले लोगों को बहुत बातें सुनाया चाहता था इस कारण आधी रात लों शिक्षा देता रहा। जिस उपरौठी कोठरी में वे एकट्ठे हुए लोग अधिक थे और उस में बहुत दीपक भी बरते थे। गरमी के मारे यूतुखुस

नाम एक तरुण खिड़की पर बैठा हुआ भारी नींद में झुका जाता था और पावल के बड़ी बेर लों बातें करते करते वह नींद के मारे झुकके तीसरे खंड से नीचे गिर पड़ा और मरा उठाया गया ।

बेचारे तरुण की दशा देख सब देखनेहारे बिस्मित हो पुकार उठे परन्तु पावल तुरन्त उतरके उस की लोथ पर लिपट गया और उस के फिर जी उठने के लिये ईश्वर से बिन्ती किई । उस की दुहाई सुनी गई और उस ने उन सब को जो समीप खड़े हो शोक करते थे कहा कि मत घबराओ क्योंकि उस का प्राण उस में है । तब पावल फिर ऊपर जाके और शिष्यों के संग रोटी खाके बेर लों बातचीत कर चला गया ।

जब शिष्य लोगों ने देखा कि तरुण जीता और भला चंगा है तब पावल के वियोग के दुःख से शान्ति पाई । धर्म्मसभा में आलस्य और असावधानी से सो जाना पाप है परन्तु ऐसा जाना जाता है कि यूतुखुस अकस्मात अपनी इच्छा बिना नींद में पड़ गया तो इस से पापी न ठहरा ।

पावल का इफिसियों से बिदा होना ।

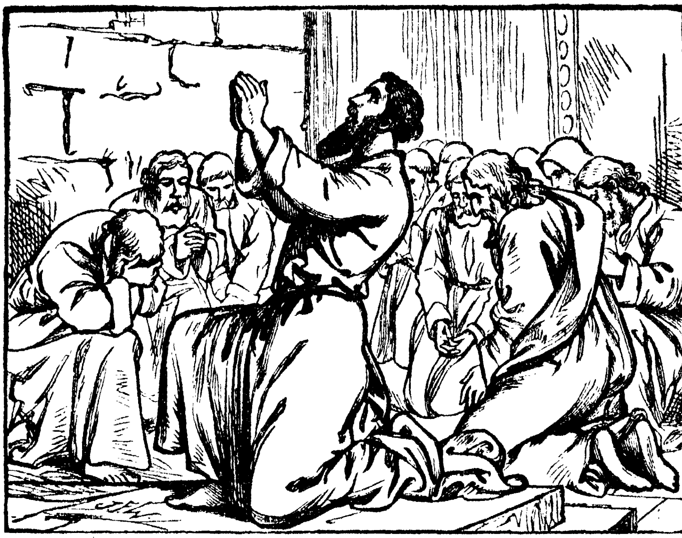
पावल के संगी लोग जहाज पर चढ़के आगे गये । पावल ने चाहा कि अस्सुस नगर लों जहां जहाज का ठहरना था पांव पांव चले दस एक कोस का रास्ता था और मार्ग में सिन्दूर वृक्षों की अच्छी छाया थी । अस्सुस में जहाज पर चढ़के वे चलते चलते मिलेतुस नगर में आये जो इफिसुस से पन्द्रह कोस दूर था ।

पावल इफिसुस की कलीसिया के प्राचीनों को बहुत देखा चाहता पर यह न जानता था कि मेरा जहाज कब लों मिलेतुस में रहैगा सो उस को छोड़ना कठिन था सो उस ने उन को मिलेतुस में बुलाया। वे अपने प्यारे शिक्षक के मुख को फिर देखने से अति आह्लादित हुए और तुरन्त उस के पास आये।

उन्हें एकांत में ले जाके पावल ने सलाम कर बड़ी कोमलता से उन को उपदेश दिया। उन्हें उन बातों को फिर चिताकर जो अगले दिनों में उन से कही गईं वह बोला कि अब मैं यिरूशलीम को जाता हूं पर नहीं जानता हूं कि वहां मुझ पर क्या बीतेगा। केवल यही जानता हूं कि पवित्रात्मा नगर नगर साक्षी देता है कि बंधन और क्लेश मेरे लिये धरे हैं। परन्तु मैं इन बातों की चिन्ता नहीं करता हूं और न अपना प्राण इतना प्रिय जानता हूं इस की अपेक्षा से कि मैं अपनी दौड़ को और उस सेवकाई को जिसे मैं ने प्रभु यीशु से पाई पूरा करूं।

उस ने उन से यह भी कहा कि मैं जानता हूं कि तुम सब मेरा मुंह फिर न देखोगे इस लिये मैं ने जो तीन बरस रात और दिन रो रोके हर एक को चिताना न छोड़ा यह स्मरण करते हुए जागते रहो। और अब हे भाइयो मैं तुम्हें ईश्वर को और उस के अनुग्रह के बचन को सौंप देता हूं जो तुम्हें सुधारने और सब पवित्र किये हुए लोगों के बीच में अधिकार दे सकता है। तुम आप जानते हो कि मेरे लिये और मेरे संगियों के लिये जो अवश्य था सो इन्हीं हाथों ने कमाया।

ये बातें कहके उस ने अपने घुटने टेकके उन सभों



पावल की प्रार्थना ।

के संग प्रार्थना किई । और वे सब बिलक बिलक रोये और पावल के गले लिपटके उसे चूमा और सब से अधिक इस बात पर शोक करते थे जो उस ने कही थी कि तुम मेरा मुंह फिर न देखोगे । जब लों वह जहाज पास न पहुंचा तब लों उन्हों ने उसे न छोड़ा । जब जहाज उन की दृष्टि से दूर हो गया था तब उदास हो वे इफिसुस को लौट गये ।

उचित है कि जो हमें शिक्षा देते और निस्तार का मार्ग बताते हैं उन्हें हम प्यार करें यद्यपि यह सदा हमारे संग नहीं रह सकते हैं तौभी एक हमारा मित्र है जो अबिनाशी है और यदि हम उस पर भरोसा करते हैं वह कभी हमें न छोड़ेगा । ज्ञानवान वह है जो उस से मित्रता करता है ।

पावल का यिरूशलीम को जाना।

चलते चलते कभी एक जहाज में और कभी दूसरे में चढ़ता था निदान पावल सूर में उतरा और वहां सात दिन रहा क्योंकि नाव का बोझ वहां उतारना था। सो पावल और उस के संगी शिष्य लोग नगर में देखने को चले गये। वहां कई आगमज्ञानी थे जिन्हों ने पावल को बताया कि यिरूशलीम में जाने से तुम को बहुत क्लेश होगा। जब चलने का समय आ पहुंचा तो सूर के मसीही लोगों ने स्त्रियों और बालकों समेत उन्हें समुद्र के तीर लों पहुंचाया और वहां घुटने टेकके वे एक दूसरे के लिये प्रार्थना करते थे तब वे अपने अपने घर को लौट गये और पावल और उस के साथी जहाज पर फिर चढ़े।

सूर से एक दिन चलकर वे तलिमैस में पहुंचे और भाइयों को नमस्कार करके उन के संग एक दिन रहे। वहां समुद्र छोड़ वे स्थल पर चले। जब वे कैसरिया में आये तब फिलिप नाम सुसमाचार प्रचारक के यहां टिके। यह वह है जो बीस बरस आगे जंगल में भेजा गया था कि कूश की रानी के प्रधान को उपदेश देवे। फिलिप की चार कुंवारी पुत्रियां थीं जो प्रवचन कहती थीं।

जब पावल बहुत दिन वहां रह चुका था तब अगबुस नाम एक भविष्यद्वक्ता फिलिप के घर में आ पहुंचा और उस ने पावल का पटुका लेके अपने हाथ पांव बांधे और कहा पवित्रात्मा यह कहता है कि जिस मनुष्य का यह पटुका है उस को यिरूशलीम में यिहूदी लोग योंहीं बांधेंगे और अन्यजातियों के हाथ सौंपेंगे।

यह बचन सुन पावल के साथी और उस के मित्र लोग जो कैसरिया से उस के पास आये थे सो रो रो बिन्ती करने लगे कि यिरूशलीम को न जाइये । परन्तु उस ने उत्तर दिया यह तुम क्या करते हो कि रोते और मेरे मन को तोड़ते हो । मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिये यिरूशलीम में केवल बांधे जाने को नहीं परन्तु मरने को तैयार हूं । पावल अपनी बिपत्तों पर कम शोक करता पर अपने मित्रों के सन्ताप से अधिक शोक करता था ।

जब भाइयों ने देखा कि पावल किसी के रोके से नहीं रुकता तब यह कहा कि प्रभु की इच्छा पूरी होवे ये चुप रहे क्योंकि उन्हों ने यह बिचार किया कि जो कुछ ईश्वर चाहे सो ही भला होगा । कुछ दिनों के पीछे पावल और उस के साथी सामग्री बांध छांदके यिरूशलीम की ओर सिधारे और कैसरिया के शिष्यों में से कई एक भी उन के संग हो लिये ।

इस में पावल का निदर्शन हमारे लिये अच्छा ठहरता है । उस ने बिचार किया कि मनुष्य का नहीं परन्तु ईश्वर का कहा मान्ना चाहिये । मित्रों की बिन्ती सुन वह स्थिर रहा और जो कुछ ईश्वर उस पर भेजे सो ही उठाने को तैयार था ।

मन्दिर में हुल्लड़ का मचाया जाना ।

यिरूशलीम के भाई लोग बड़े आनन्द से पावल को ग्रहण करते थे और दूसरे दिन उसे देखने और सुन्ने के लिये याकूब के घर पर बड़ी सभा एकट्ठी हुई । वह रुपये जो यिरूशलीम नगर के निर्धन भाइयों के लिये कई देशों

से भेजे गये थे साम्हने किये गये तब पावल बोलने लगा। यिरूशलीम को छोड़े हुए अब चार बरस बीत गये थे सो जहां जहां इस बीच में गया था और जो जो काम ईश्वर ने उस की सेवकाई के द्वारा अन्यजातियों में किये थे उन्हें एक एक करके बर्णन किया। जब उन्हों ने सुना कि अन्यजातियों में से बहुत लोग शिष्य हो गये तब आनन्दित हो प्रभु की स्तुति किई।

प्राचीनों में से कोई २ पावल से कहते थे कि लोग आप पर यह दोष लगाते हैं कि उन यिहूदियों को जो परदेशों में रहते हैं आप यह सिखाते फिरते हैं कि मूसा की व्यवस्था को त्याग दें। सो आप उन के झुठलाने के लिये यह कीजिये कि यहां चार मनुष्य हैं जिन्हों ने मन्नत मानी है उन्हें लेके उन के संग अपने को शुद्ध कर और उन के लिये खरचा दीजिये जिस्तें वे चढ़ावा चढ़ायें। पावल ने इस बात को मान लिया और दूसरे दिन उन चारों के संग शुद्ध होके मन्दिर में प्रवेश किया। परन्तु परदेश के कई यिहूदियों ने पावल को इन चारों के साथ देख और उन चारों को यूनानी जान अति क्रोधित हुए।

यिहूदी लोग अपने मन्दिर को निपट शुद्धस्थान समझते थे जिस में अन्यजातियों का प्रवेश करना बर्जित था सो यिहूदियों ने पावल को पकड़ लिया और यों चिल्लाकर भीड़ को एकट्ठा कर लिया कि यह वह मनुष्य है जो इस स्थान के बिरुद्ध सर्ब्बत्र सब लोगों को उपदेश देता है हां इस से अधिक इस ने यूनानियों को भी मन्दिर में लाके इस पवित्र स्थान को अशुद्ध किया है। यह सुन वे पावल को मन्दिर के बाहर खैंच लाये और याजकों ने तुरन्त उस के द्वारों को मूंद लिया। वहां भीड़ पावल

पर झुंझलाती और मारती थी पर इतने में वह रोकी गई ।

किसी ने दौड़के रोमी पलटन के सहस्रपति को सन्देश पहुंचाया कि महाराज सारे यिरूशलीम में घबराहट हुई है । तब वह तुरन्त योद्धाओं और शतपतियों को लेके उन पर दौड़ा । इन को देख लोगों ने पावल को मारने से हाथ उठाया । पहिले सहस्रपति ने निकट आके उसे दो जंजीरों से बांधे जाने की आज्ञा दिई और यों अगबुस का आगमज्ञान पूरा हुआ । फिर वह पूछने लगा कि यह कौन है । और इस ने क्या किया है ।

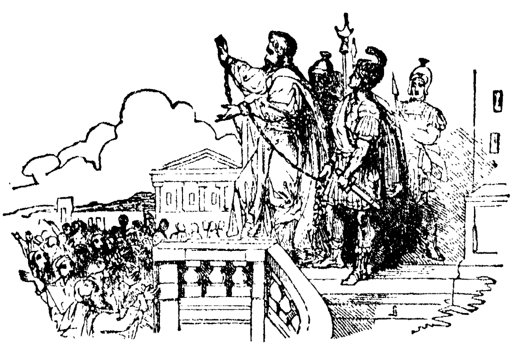


योद्धाओं का पावल को बचाना ।

तब भीड़ में कोई कुछ और कोई कुछ पुकारता था यहां लों कि हुल्लड़ के मारे सहस्रपति कोई बात ठीक नहीं जान सकता था सो उस ने पावल को गढ़ में ले जाने की आज्ञा किई और जब वह गढ़ की सीढ़ी पर पहुंचा तब उसे

भीड़ के बलात्कार से बचाने के लिये अवश्य हुआ कि योद्धा लोग उसे उठा लेवें और पीछे आ यों चिल्लाती हुई कि उसे दूर कर भीड़ दौड़ती आई और उसे घात किया चाहती थी।

जब वे पावल को गढ़ के भीतर ले जाने पर थे तब उस ने सहस्रपति से कहा आज्ञा हो तो मैं आप से कुछ कहूं। सहस्रपति ने यों समझा कि यह कोई मिसरी है जो पहिले बड़ा बलवा कर गया था उस से यह पूछा क्या तू यूनानी भाषा जानता है। क्या तू वह मिसरी नहीं है। पावल ने उत्तर दिया कि मैं तो किलिकिया के तरसुस का एक यिहूदी हूं। मैं आप से बिन्ती करता हूं कि मुझे लोगों से बोलने की आज्ञा दे।



पावल का भीड़ को समझाना।

तब सीढ़ी के ऊपर खड़ा हो उस ने लोगों को हाथ से सैन कर प्रगट किया कि मैं कुछ बोलने चाहता हूं। भीड़ तो अचंभित हो अपने झुंझलाने से चुप हो रही और यह जान कि वह इब्रानी भाषा में बातें करता है उस के बचन को सुन्ने लगी।

तब पावल ने अपना वृत्तान्त उन्हें कह सुनाया। उस ने कहा कि पहिले तो मैं ने मसीहियों को मृत्यु लों

सताया परन्तु पीछे को जब बड़ी ज्योति स्वर्ग से मेरे चारों ओर चमकी और प्रभु ने आप मुझे दर्शन दिया तब से मैं आप बिश्वासी हुआ तिस के पीछे जब मैं मन्दिर में प्रार्थना करता था त्यों ही बेसुध हुआ और उस ने मुझ से कहा कि शीघ्रता कर और तुरन्त यिरूशलीम से निकल जा क्योंकि वे मेरे विषय में तेरी साक्षी ग्रहण न करेंगे। चला जा क्योंकि मैं तुझे अन्यदेशियों के पास दूर भेजूंगा।

लोगों ने इस बात लों चुपचाप उस की सुनी परन्तु इस शब्द से कि ईश्वर ने उसे अन्यजातियों को उपदेश देने के लिये भेजा अति कोपित हुए। यिहूदी लोग अपने तईं ईश्वर का विशेष संतान कहते थे और यह न चाहते थे कि वह और किसी देश के लोगों पर अपना अनुग्रह प्रगट करे। सो क्रोध कर पुकारने लगे ऐसे मनुष्य को पृथिवी पर से दूर कर कि उस का जीता रहना उचित नहीं। जब वे यों चिल्लाते तब अपने कपड़े उतार फेंकते जिस्तें पावल के पत्थरवाह करने के लिये तैयार होवें और कोप के मारे आकाश में धूल उड़ाते थे।

यह जो यिहूदी लोगों ने चाहा कि हम ही को छोड़ ईश्वर और किसी पर कृपा न करे सो प्रगट करता कि वे बड़े आपस्वार्थी और क्रूर लोग थे। यदि पावल के प्रचारने से बहुत से यूनानी आदि लोग बिश्वास कर ईश्वर के भक्त हो गये तो यिहूदियों की कौन सी हानि हुई। इसी रीति हम देखते हैं कि हिन्दुस्तान के बहुत ब्राह्मण लोग यह नहीं चाहते कि कोरी चमार आदि जातिगण को जिन को वे नीच जाति बताते धर्म्म की शिक्षा दिई जाये। परन्तु मसीही धर्म्म में यही शिक्षा

मिलती है कि सकल जगत के लोग एक ही माता पिता के बंश हैं और कि ईश्वर सब सन्तानों को प्यार करता और कि हम को उचित है कि हर प्रकार के मनुष्यों की भलाई करें।

पावल का न्याइयों की सभा के साम्हने खड़ा होना।

लुसिअस सहस्रपति ने उपदेश को न समझा क्योंकि पावल इब्रानी भाषा बोलता था सो उस ने सोचा कि यह कोई बड़ा अपराधी होगा नहीं तो यिहूदी लोग इतने क्रोध से उस का पीछा न करते सो उस ने उस को गढ़ में ले जाने की आज्ञा किई और कहा उसे कोड़े मारके जांचो जब लों वह अपने अपराध को प्रगट न करे। जब वे पावल को टिकठी में बांधते थे तब उस ने शतपति से जो निकट खड़ा था पूछा क्या किसी मनुष्य को जो रोमी है और दंड के योग्य नहीं ठहराया गया कोड़े मारना तुम्हें उचित है।

जब शतपति ने यह सुना तब लुसिअस के पास जा बोला कि सुचेत हो यह मनुष्य तो रोमी है। तिस पर लुसिअस भी व्याकुल हुआ और पावल पास आ उस से पूछा मुझ से कह क्या तू रोमी है। पावल बोला हां मैं ऐसा ही जन्मा। तब पावल के बंधन के खोलने की आज्ञा दिई गई। लुसिअस तो डर गया क्योंकि किसी रोमी से ऐसा करना जैसा उस ने पावल से किया था बर्जित था। तथापि उस ने पावल को छोड़ नहीं दिया क्योंकि अब लों न समझा कि यिहूदी लोग किस कारण उस का पीछा करते हैं। फिर पावल की रक्षा के लिये अच्छा भी

न था कि वह गढ़ में बंद रहे न हो कि भीड़ उस को टुकड़े टुकड़े कर डाले ।

दूसरे दिन लुसिअस ने यिहूदियों के महायाजकों और उन की बड़ी सभा को एकट्ठा कर पावल को बंधनों से खोल उन के आगे खड़ा किया क्योंकि वह निश्चय जान्ने चाहता था कि उस पर ये लोग क्यों दोष लगाते हैं ।

बहत्तर न्याइयों की ओर ताकके पावल ने कहा कि हे भाइयो मैं इस दिन लों सर्व्वथा ईश्वर के आगे सच्चे मन से चला हूं । परन्तु हननिया महायाजक ने पावल के इस बचन से कि मैं निर्दोषी हूं निपट क्रोध कर उन लोगों को जो उस के निकट खड़े थे उस के मुंह पर मारने की आज्ञा दिई । पावल ने उस से कहा हे चूना फेरी हुई भीत ईश्वर तुझे मारेगा तू तो व्यवस्था के अनुसार मेरा न्याय करने को बैठा है और क्या तू व्यवस्था के बिरुद्ध मुझे मारने की आज्ञा देता है । पावल ने उस का दृष्टान्त कच्ची भीत का जो बाहर श्वेतबर्ण भीतर काली है इस कारण दिया कि न्याय करने के लिये जब बैठा तब ही अन्याय करता है ।

पावल का यह बचन पांच बरस पाके पूरा हुआ क्योंकि राजद्रोहियों ने उस का घात किया । उस की बातें सुन जो लोग निकट खड़े थे बोले क्या तू ईश्वर के प्रधान याजक को बुरा कहता है । पावल ने कहा हे भाइयो मैं नहीं जानता था कि यह प्रधान याजक है क्योंकि लिखा है तू अपने लोगों के अध्यक्ष को बुरा न कहना ।

उन न्याय करनेहारों में से जो सभा में बैठे थे कोई कोई फरीसी और कोई कोई सदूकी थे । फरीसी यह

मानते थे कि मुर्दे फिर जी उठेंगे सदूकी कहते थे कि नहीं वे न उठेंगे। पावल ने सभा में पुकारा कि हे भाइयो मैं फरीसी और फरीसियों के बंश का हूं और यहां मृतकों की आशा और पुनरुत्थान के विषय में मेरा बिचार किया जाता है। इस कहने से फरीसी आनन्दित हुए परन्तु सदूकी अप्रसन्न हुए। सो दोनों में विवाद हुआ और लोगों में फूट पड़ी। जब बड़ा झगड़ा हुआ तब सहस्रपति ने इस डर से कि पावल उन से टुकड़े टुकड़े न किया जावे योद्धाओं को आज्ञा दिई कि जाके उस को उन के बीच में से छीनके गढ़ में लाओ।

उस रात को जब पावल अकेला बन्दीगृह में पड़ा था तब उस में उदास हुआ होगा परन्तु प्रभु यीशु ने उसे दर्शन दे उसे ढाढ़स बंधवाया और कहा जैसा तू ने यिरूशलीम में मेरे विषय में साक्षी दिई है वैसा ही तुझे रोम में भी साक्षी देना अवश्य है।

ऐसे लोग भी मिलते हैं जो अपने को मसीही समझते हैं पर अपने बिश्वास को प्रगट करने नहीं चाहते। यह बस नहीं है। प्रभु का दास चुपके से होना अच्छी बात नहीं है। उस ने जो प्राण देने लों हमें प्यार किया तो तन मन औ धन से उस का चेला बन्ना उचित है जैसा कि पावल ने सब लोगों के आगे उस प्रभु को मान लिया वैसा ही हम भी करें और यदि लोग हमारी निन्दा करें तो प्रभु आप हमें दिलासा देगा।

पावल का कैसरिया को भेजा जाना।

बिहान जब हुआ तब चालीस मनुष्यों ने एका करके

ठहराया कि जब लों हम पावल को मार न डालें तब लों जो खायें अथवा पीयें तो हम पर धिक्कार। महायाजकों के पास जा बोले कि सहस्रपति को समझाइये कि पावल को फिर दूसरे दिन सभा के साम्हने खड़ा कर देवे। उन की यह इच्छा थी कि घात में बैठकर पावल को आते पकड़ें और मार डालें।

परन्तु पावल के भांजे ने सुना कि वे घात में लगे हैं सो उस ने गढ़ में प्रवेश कर पावल को इस बात का संदेश दिया। तिस पर पावल ने शतपतियों में से एक को बुलाके कहा इस तरुण को सहस्रपति के पास ले जा क्योंकि यह उस से कुछ कहा चाहता है।

लुसिअस ने उस तरुण का हाथ पकड़के और एकान्त में ले जाके पूछा तू जो मुझ से कहा चाहता है सो क्या है। तरुण ने उन हत्यारों के उपाय का वर्णन किया और लुसिअस से बिन्ती किई कि जब सभा पावल को फिर बुलावे तो आप न भेजिये नहीं तो वह मार डाला जायेगा। तब लुसिअस ने तरुण को यह आज्ञा देके बिदा किया कि किसी से न कहना कि तू ने मुझे यह बातें बताई हैं।

यह जान कि यिरूशलीम में पावल का प्राण बचाना कठिन होगा लुसिअस ने सोचा कि आज की रात उसे कहीं भेजना अवश्य है। सो दो शतपतिओं को बुलाके उस ने आज्ञा दिई कि दो सौ योद्धाओं और सत्तर घुड़चढ़ों और दो सौ भलैतों को पहर रात बीते कैसरिया को जाने के लिये तैयार करो और बाहन तैयार रक्खो कि वे पावल को बैठाके फीलिक्स अध्यक्ष के पास कुशल से ले जावें। इतने योद्धा लोग इस लिये भेजे गये न हो कि उस के बैरी मार्ग में बलात्कार से पावल को मारने का यत्न करें।

चलते समय लुसिअस ने उन्हें फीलिक्स के नाम पर एक चिट्ठी भी दिई जिस में पावल के बंधुआ होने का और उस के बैरियों के घात लगाने का कुछ बर्णन लिखा गया था। उस में पावल का कैसरिया में भेजे जाने का कारण था और यह कि यिहूदियों को आज्ञा दिई गई थी कि यदि उस के बिरुद्ध उन का कुछ कहना हो तो फीलिक्स के आगे उसे कहें।

योद्धा लोग पावल को लेके रात को चुपचाप निकले और अठारह कोस चल सवेरे को अंतीपात्रिस नगर में पहुंचे। वहां से चार सौ पैदलवाले लौट गये और घुड़चढ़ों को पावल के संग कैसरिया में जाने दिया। लुसिअस की चिट्ठी पढ़कर फीलिक्स ने पूछा पावल किस प्रदेश का है। और जब जाना कि किलिकिया का है तब कहा जब तेरे दोषदायक भी आवें तब मैं तेरी सुनूंगा। उस ने पावल को बन्दीगृह में न डाला परन्तु उसे हेरोदेस के राजभवन में पहरे में रखने की आज्ञा किई।

इस बृत्तान्त से हम देखते हैं कि सर्कार की रखवाली करने से प्रजा को बहुत लाभ होता है। दुष्टों ने पावल को बध करने का यत्न किया था पर वह उन के हाथ से बचा। हमें उचित है कि अधिपतों को मानें और उन के लिये प्रार्थना भी करें क्योंकि उन के द्वारा हम बिश्राम और चैन से जन्म बिताते हैं। हम इस लिये कर भी देते हैं जिस्तें योद्धा आदि लोग हमारी रक्षा के लिये और बिचारकर्त्ता आदि मनुष्यों में न्याय करने के लिये होवें और इन से बड़ा लाभ हम को पहुंचता है।

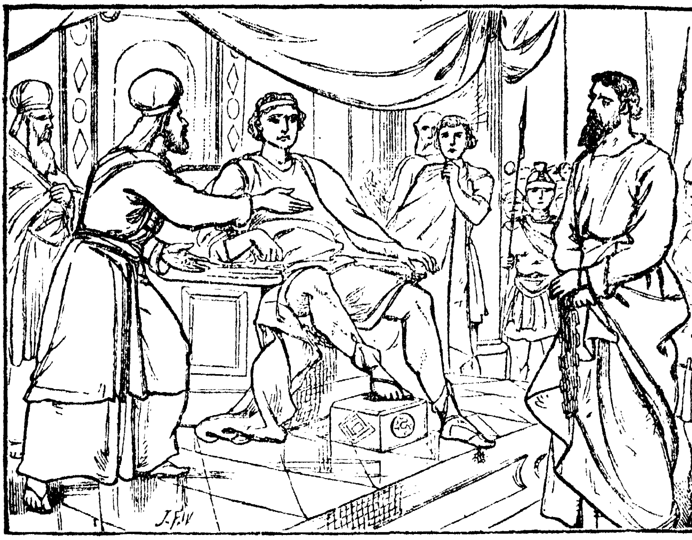
हम यह भी सीखते हैं कि संसार ईश्वर की आज्ञानुसार चलता है जब रोमी लोगों ने पावल का प्राण बचाया तो

ईश्वर के तात्पर्य्य को पूरा कर देते परन्तु यह समझते थे कि हम केवल अपनी इच्छानुसार चलते हैं। पावल के लिये अच्छा था कि रोमी निवासी का पद रखता था क्योंकि उस समय में रोमी लोगों को नाना प्रकार की रक्षा मिला करती थीं परन्तु उस के लिये यह और भी अच्छा था कि स्वर्गीय राज्य में निवासी था और यही कुशलता हम लोगों को भी मिल सकती है।

पावल का फीलिक्स के आगे खड़ा होना।

पांच दिन के पीछे हननिया प्रधान याजक कितने प्राचीनों के और तरतुल्लुस नाम एक सुवक्ता के संग आया और उन्हों ने अध्यक्ष के आगे पावल पर नालिश किई। पहिले तरतुल्लुस ने फीलिक्स के अच्छे राज्य की बड़ी स्तुति किई। यह झूठ बात थी क्योंकि यिहूदी लोग उस की निश्चिन्तता और क्रूरता की बहुत निन्दा करते थे। फिर तरतुल्लुस ने यह बहाना किया कि पावल देश देश फिरकर क्लेशदायक और जगत के सारे यिहूदियों में बलवा करनेहारा है और फिर नासरियों के पन्थ का अगुआ हो उस ने मन्दिर को भी अशुद्ध करने चाहा और फिर कि जब यिहूदियों ने उसे इन पापों के लिये बिचार करने चाहा तब लुसिअस ने आके बड़ी बरियाई से उस को हमारे हाथों से छीन आप के पास भेज दिया। यिहूदी याजकों ने भी उस का साथ देके कहा कि ये बातें योंही हैं।

तब फीलिक्स ने सैन कर पावल को बोलने की आज्ञा दिई। पावल ने कहा कि मेरे यह बैरी उन बातों



पावल का फीलिक्स के आगे खड़ा होना।

को जिन के विषय में मुझ पर दोष लगाते हैं तेरे आगे सिद्ध नहीं कर सकते हैं और मैं ने किसी से न बिवाद किया न कहीं भीड़ लगाई। हां एक बात मैं आप के आगे मान लेता हूं कि जिस मार्ग को वे कुमार्ग कहते हैं उसी की रीति पर मैं अपने पितरों के ईश्वर की सेवा करता हूं और यह उपदेश भी देता हूं कि धर्म्मी और अधर्म्मी भी सब मृतकों का जी उठना होगा।

फीलिक्स ने अपने मन में पावल को निरपराध समझा परन्तु यिहूदियों के क्रोध से डरता था और इस के बिपरीत वह रोमी निवासी को निष्पाप दोषी ठहराने से डरता था सो उस ने यिहूदियों से कहा कि जब लुसिअस सहस्रपति आवे तब मैं तुम्हारी बातों का निर्णय करूंगा।

फिर उस ने एक शतपति को आज्ञा दिई कि पावल की रक्षा कर पर उस को सुख से रख और उस के मित्रों

में से किसी को उस की सेवा करने से मत रोक। कैसरिया नगर में पावल के बहुत मित्र थे और जब उसे किसी वस्तु का प्रयोजन था तब वे आनन्द से देते थे। प्रगट नहीं कि लुसिअस कभी कैसरिया में आया सो पावल बेर लों रुका रहा।

फीलिक्स की पत्नी द्रुसिल्ला नाम एक यिहूदिनी राज-पुत्री अर्थात उस हेरोदेस की बेटी थी जो कीड़ों से खाया गया। वह अपने पहिले पति को त्याग फीलिक्स की स्त्री हो गई थी। जब वह उस के संग कैसरिया में आई तब उस को यह संदेश मिला कि पावल नाम एक नया पन्थ का एक अति प्रसिद्ध शिक्षक यहां बंधुआ है। द्रुसिल्ला को उस की सुन्नै की इच्छा हुई होगी सो एक दिन पावल बुलाया गया और मसीह पर बिश्वास करने के विषय में उन्हों ने उस की सुनी।

फीलिक्स तो बड़ा दुष्ट जन था उस ने यिहूदी प्रधान याजक को बध किया था। घूस लेके उस ने पातकियों को बन्दीगृह से छुड़ाया था और घूस के न पाने से धर्म्मी जनों को बन्दीगृह में डाला था। वह इस समय छिनाला में रहता था। सो जब पावल उस से ईश्वर और मनुष्य के आगे धर्म्म करने की और अपनी कुइच्छाओं के रोकने के और आनेवाले बिचार के दिन के विषय में बातें करता था तब फीलिक्स उस के आगे कांपने लगा। वह मन में जानता था कि मेरे पाप इतने बड़े हैं कि यदि मैं पश्चात्ताप कर उन्हें न छोड़ूं तो जब ईश्वर उन का लेखा लेवे तब मैं नष्ट होऊंगा।

परन्तु फीलिक्स अपने पापों को छोड़ने नहीं चाहता था और उस की केवल इतनी इच्छा थी कि जो मेरे

कर्मों का फल होगा सो मैं बिचार न करूं और पावल से बोला कि अभी तो जा और अवसर पाके मैं तुझे फिर बुलाऊंगा। पावल ने अपने को निर्दोषी ठहराया था तथापि फीलिक्स ने उस को बंद कर रक्खा। वह उसे बार बार भी बुलाता और उस से बातचीत करता पर केवल इस आशा से कि पावल मुझे रुपये देगा कि मैं उसे छोड़ देऊं। परन्तु फीलिक्स की कुचाली के कारण से दो बरस के पीछे उस के काम करने के लिये दूसरा अध्यक्ष भेजा गया परन्तु जाते समय फीलिक्स यिहूदियों का मन रखने की इच्छा कर पावल को बंधा हुआ छोड़ गया।

फीलिक्स ने अपने दुराचार को न छोड़ा होगा। उस के वृत्तान्त से हम यह शिक्षा पाते हैं कि अभी पाप को त्यागना और धर्म्म के मार्ग में चलना अवश्य है। जो दूसरे अवसर के लिये बाट जोहता है सो अपने पापों में मरेगा जब कि मन तुम को अपराधी ठहराता है तो तुरन्त पश्चात्ताप करो और ईश्वर की ओर फिरो। अब मुक्ति पाने का समय और अब निस्तार का दिन है।

पावल का फेसतुस के आगे खड़ा होना।

नये अध्यक्ष का नाम फेसतुस था। वहां पहुंचके वह केवल तीन दिन रहा तब यिरूशलीम को गया। तब महायाजकों ने उस पास आ उस से बिन्ती किई कि पावल को यिरूशलीम में मंगवाइये और यहां उस का न्याय कीजिये परन्तु उन का यह कपट था क्योंकि वे उसे मार्ग में मार डालने को घात लगाये हुए थे। फेसतुस ने न माना और कहा कि पावल कैसरिया में पहरे में

रहता है और मैं आप वहां शीघ्र जाऊंगा। जो चाहे सो वहां जावे जो कुछ उस ने बुरा किया था उस का दोष उस पर लगावे।

दस एक दिन के पीछे फेसतुस ने कैसरिया में प्रवेश किया और बिचारासन पर बैठके पावल को लाने की आज्ञा किई। उस के बैरी भी आये थे और उस पर बहुत और भारी भारी दोष लगाने लगे परन्तु वे उन्हें प्रमाणों से सिद्ध न कर सके।

पावल ने उत्तर दिया कि मैं ने यिहूदियों की व्यवस्था के न मन्दिर के न कैसर के बिरुद्ध कुछ अपराध किया है। जैसा फीलिक्स ने वैसा फेसतुस ने देखा कि पावल निर्दोष है परन्तु वह भी यिहूदियों को प्रसन्न करने चाहता था सो बोला क्या तू यिरूशलीम को जाके वहां मेरे आगे इन बातों के विषय में बिचार किया जाने चाहता है।

यह यिहूदी याजकों की इच्छा थी जिस्तें मार्ग में उसे मार डालें। उन की यह इच्छा पावल को प्रगट हुई और वह बोला यिहूदियों का जैसा आप भी अच्छी रीति से जानते हैं मैं ने कुछ अपराध नहीं किया है। मैं कैसर की दोहाई देता हूं।

यदि कोई रोमनिवासी समझता कि मुझ से अन्याय किया जाता है तो यह मांग सकता था कि मुझे रोम नगर में भेज दो जिस्तें कैसर आप मेरा न्याय करे। जब यह दोहाई हो चुकी थी तब फेसतुस ने उस के जांचने से हाथ उठाया और कहा तू ने कैसर की दोहाई दिई है तू कैसर ही के पास जायेगा। तब उस ने शतपति को आज्ञा दिई कि जब लों जहाज न मिले जिस में मैं उसे कैसर के पास भेजूं तब लों उस की रक्षा करो।

यिहूदी लोग तो और भी निरास हो यिरूशलीम को लौट गये। लूट तो उन के हाथ से निकल गई थी। अब पावल को वहां जाना था जहां यह बैरी फिर न मार सकते न पत्थरवाह कर सकते थे।

ऐसा हो सकता है कि दुष्ट लोग कपट से धर्म्मी पर प्रबन्ध करें पर बिना ईश्वर की आज्ञा के वे उस की हानि नहीं कर सकते हैं।

पावल का अग्रिप्पा के आगे खड़ा होना।

जब कितने दिन बीत गये तब द्रुसिल्ला का भाई अग्रिप्पा राजा और उस की बहिन बरनीकी फेसतुस को नमस्कार करने के लिये कैसरिया में आन पहुंचे। और जब वे वहां बहुत दिन ठहरे रहे तब फेसतुस ने उन से कहा कि फीलिक्स एक कैदी यहां छोड़ गया है जिस का अद्भुत बृत्तान्त है। यिहूदियों के प्राचीन लोग उस को बहुत दंड देने चाहते थे परन्तु उन से कहा गया कि रोमियों की यही रीति है कि जब लों किसी को दण्ड के योग्य नहीं ठहराते तब लों उस को दण्ड नहीं देते। और फिर जब बात निर्णय किई गई तब उस पर दोष नहीं लगाते थे केवल किसी मरे हुए यीशु के विषय में कुछ विवाद हुआ क्योंकि पावल कहता कि वह जीता है। यह सुनकर अग्रिप्पा ने कहा कि मैं आप भी इस मनुष्य की सुन्ने चाहता हूं। फेसतुस ने उत्तर दिया कि कल आप उसे सुनिये।

सो दूसरे दिन जब अग्रिप्पा और बरनीकी ने बड़ी धूमधाम से आके सहस्रपतियों और नगर के श्रेष्ठ मनुष्यों

के संग सभास्थान में प्रवेश किया तब पावल हाथों में जंजीर बांधे हुए वहां बुलाया गया ।



पावल अग्रिप्पा के दरबार में ।

फेसतुस ने कहा हे राजा मुझे बताइये कि मैं जब इस मनुष्य को रोम को भेजता हूं तब उस के संग कैसा दोषपत्र लिखूं क्योंकि उस का कोई अपराध नहीं निकला परन्तु बंधुवे को महाराजा के पास भेजना और जो दोष उस पर लगाये गये हैं उन को न बताना मुझे अनुचित समझ पड़ता है । तिस पर अग्रिप्पा ने पावल से कहा तुझे अपने विषय में बोलने की आज्ञा है ।

तब उस हाथ को बढ़ाकर जो पहरे से जंजीर में बंधा था पावल ने अपनी कथा अग्रिप्पा राजा को कह सुनाई । जो कुछ उस ने मसीहियों के बिरुद्ध किया था और जैसा दमेशक के मार्ग में प्रभु यीशु का दर्शन पाया था और किस रीति शिष्य हो गया था उस ने सब बर्णन किया । जब उस ने यीशु का मृतकों में से जी उठने

का बर्णन किया तब फेसतुस ने बड़े शब्द से पुकारा हे पावल तू बौड़हा है बहुत विद्या ने तुझे बौड़हा कर दिया है। परन्तु पावल ने बड़ी स्थिरता और आदर सन्मान से कहा हे श्रीमान फेसतुस मैं बौड़हा नहीं हूं पर सच्चाई और सज्ञानता की बातें कहता हूं और राजा भी इन बातों को जानता है।



पावल का अपनी जंजीर दिखाना।

तब अग्रिप्पा की ओर फिरकर बोला हे राजा अग्रिप्पा क्या आप प्रवक्ताओं का बिश्वास करते हैं। मैं जानता हूं कि आप बिश्वास करते हैं। अग्रिप्पा ने ठठोली से कहा तू थोड़ा समझाने से मुझे ख्रीष्टियान बनाने चाहता है। पावल ने अपने जकड़े हुए हाथों को बढ़ा उत्तर दिया कि ईश्वर करे क्या थोड़े में क्या बहुत में न केवल आप पर सब जो आज मेरी सुनते हैं इन बंधनों को छोड़ ऐसे हो जायें जैसा मैं हूं।

जब उस ने यह कहा तब राजा और अध्यक्ष और बरनीकी और उन के संग बैठनेहारे सब उठे और दूसरी कोठरी में गये । आपस में बातचीत कर उन्हों ने मान लिया कि इस मनुष्य ने बध किये जाने अथवा बांधे जाने के योग्य कुछ नहीं किया है पर इस कारण कि कैसर की दोहाई दिई है तो रोम को जाना पड़ेगा ।

पावल के हाथ तो जकड़े हुए परन्तु उस का मन स्वाधीन था । फेसतुस और अग्रिप्पा अपने को स्वाधीन समझते पर पाप के दास थे। जो कोई पाप करता सो पाप का दास होता । जन्म से यह हम सभों की दशा है और जब लों प्रभु यीशु हम को न छुड़ावे हम छूट नहीं सकते हैं । यही हमारी प्रार्थना होवे हे ईश्वर हम बेचारों को जो अपने पाप की जंजीरों से बंधे हुए हैं तू अपनी बड़ी कृपा से छुटा दे ।

पावल का समुद्र पर चलना ।

तिस के पीछे पावल और कितने और बंधुवे एक जहाज पर जो थोड़ी दूर रोम की ओर जाता था रक्खे गये । यूलियुस नाम एक शतपति योद्धाओं को संग ले उन की रखवाली करता था । लूका और अरिस्तार्खुस नाम पावल के दो मित्र उसी नाव में भी थे । यह वह लूका है जिस ने उस सुसमाचार पुस्तक को रचा जो उस के नाम से विख्यात है । उस ने प्रेरितों की क्रिया नाम पुस्तक को भी रचा कि जिस में इस याचा का वर्णन पाया जाता है । दूसरे दिन उन्हों ने सीदोन में लगान किया और यूलियुस ने पावल के संग प्रेम से व्यवहार करके उसे

उस के मित्रों के पास सत्कार पाने को जाने दिया परन्तु वह योद्धा जिस से उस की जंजीर बंधी हुई थी साथ गया होगा।

वहां से खोलके बयार के सन्मुख होने के कारण वे कुपरूस टापू के नीचे नीचे चले और लुकिया देश के मुरा नाम नगर में पहुंचे। सिकन्दरिया से जहाज अनाज से लदे हुए बहुत जाते थे। ऐसा एक जहाज जो रोम नगर को जाता था वहां आन पहुंचा और शतपति ने पावल और उस के संगियों को उस पर चढ़ाया। बयार उस समय उन्हें बहुत रोक देती थी सो बहुत दिन लों धीरे धीरे चलकर वे बड़ी कठिनता से सुन्दरघाट नाम एक स्थान में पहुंचे जो क्रीते के बड़े टापू में है। वही समय आ गया था जिस में समुद्र आंधी का निपट मारा हुआ होता और यात्रा करने में जोखिम होती थी सो पावल ने उन्हें समझाके कहा हे मनुष्यो मैं देखता हूं कि इस जलयात्रा में हानि और बड़ा नाश केवल बोझाई और नाव का नहीं परन्तु हमारे प्राणों का भी होनेवाला है।

परन्तु वह लंगरबारी जाड़े का समय काटने को अच्छी न थी सो बहुतेरों ने परामर्श दिया कि वहां से खोलके दूसरे बंदर में चलें जो बहुत दूर न था और वहां जाड़ा काटें। और शतपति ने मांझी और नाव के स्वामी की बातों को पावल की बातों से अधिक माना।

सो जब दक्खिनैया मंद मंद बहने लगी तो यह समझके कि हमारा मनोरथ पूरा हुआ उन्हों ने लंगर उठाया और क्रीते के तीर धीरे धीरे चले गये। परन्तु थोड़ी बेर में अति प्रचंड एक आंधी उठी जिस के आगे



पावल का जहाज।

जहाज ठहर न सका और वे उड़ाये हुए चले गये। मांझी लोग निपट डरते थे कि बयार के मारे जहाज टूटके टुकड़ा टुकड़ा हो जायेगा सो मसतूल गिराके जहाज को नीचे से जंजीरों से बांधा और अनेक उपाय किये। दूसरे दिन जब आंधी थम न गई उन्हों ने सोचा कि अब नाव डूबने पर है तब बोझाई फेंकने लगे और तिस के पीछे नाव की सामग्री फेंक दिई।

बहुत दिन लों ऐसी आंधी चली कि बड़ा अंधियारा रहा और न सूर्य्य न तारे दिखाई दिये जिस्तें जानें कि हम कहां पर पहुंच गये हैं और जहाज बेचारा लहरों पर नाचता रहा तब मांझी लोग अति व्याकुल हो गये और बचने की सारी आशा जाती रही।

एक दिन इस आंधी के हौल और लहरों की गरज के बीच में पावल उन कांपते हुए मांझियों और योद्धाओं में

खड़ा हो उन्हें यों दिलासा दिया कि हे मनुष्यो उचित था कि तुम मेरी बात मानते और क्रेते से न खोलते न यह हानि और टूटी उठाते पर अब मैं तुम से बिन्ती करता हूं कि ढ़ढ़ास बांधो क्योंकि तुम में से किसी के प्राण का नाश न होगा केवल नाव का। पावल ने तो इस बात को आप न जाना था बरन रात को ईश्वर के एक दूत ने उसे दर्शन दे कहा था कि जहाज किसी टापू के निकट जा पड़ेगा परन्तु मत डर तुझे कैसर के आगे खड़ा होना अवश्य है और देख ईश्वर ने सभों को जो तेरे संग जलयात्रा करते हैं तुझे दिये हैं।

जब और सब व्याकुल हुए तब पावल क्यों न डरा। कारण यह था कि वह ईश्वर पर पूरा भरोसा रखता था। वह उस का यों नाम लेता था कि जिस ईश्वर का मैं हूं और जिस की सेवा करता हूं अपने दासों को उस परमेश्वर का यह प्रण है कि डरो मत मैं तुम्हारे साथ हूं।

जहाज का टूटना।

चौदह दिन रात लों उन का जहाज अदरिये के समुद्र में इधर उधर मारा फिरा तब आधी रात को मल्लाहों ने जाना कि हम किसी देश के निकट आ रहे हैं। तब उन्हों ने रस्सी डालके थाह लिई और बीस पुरसा पाया और थोड़ा आगे बढ़के फिर थाह लिई और पन्द्रह पुरसा पाया। तब यह बिचार कर कि अब नाव पत्थरों पर लगने पर है उन्हों ने नाव की पिछाड़ी से चार लंगर डाले और भोर का होना मनाते रहे।

मल्लाह लोग सोचते थे कि अब जहाज टूटने से किसी रीति से बच न सकेगा सो अपने बचाने के लिये योद्धाओं

और बंधुओं की चिन्ता न कर गलही से लंगर डालने के बहाना से डोंगी समुद्र में उतार दिई । पावल ने उन का कपट जान योद्धाओं से कहा जो ये लोग जहाज पर न रहें तो तुम नहीं बच सकते हो क्योंकि मल्लाहों को छोड़ कौन जहाज को विशेष करके ऐसी आंधी के बीच में चला सकता है । शतपति ने इस बात को सत्य जान आज्ञा दिई और योद्धाओं ने डोंगी के रस्से काटके उसे गिरा दिया ।

जब भोर होने पर थी तब पावल ने यह कहके सभों से भोजन करने को बिन्ती किई कि आज चौदह दिन हुए कि तुम आसरा देखते और भूखे रहते हो इस लिये मैं तुम से बिन्ती करता हूं कि कुछ खा लो जिस से तुम्हारा बचाव होगा । उन दिनों में वे ऐसे व्याकुल हुए थे कि भोजन की कुछ चिन्ता न रही । वह धीरज देकर उन से यह भी कहता था कि तुम में से किसी के सिर से एक बाल भी न गिरेगा ।

तब पावल ने यह कह रोटी ले सभों के साम्हने ईश्वर का धन्यवाद किया और तोड़के खाने लगा । उस की शान्ति देख सभों ने ढाढ़स बांधा और भोजन किय । सब जो नाव में थे सो दो सौ छिहत्तर प्राणी थे । भोजन से तृप्त होके उन्हों ने जहाज को हलका करने के लिये गेहूं को जिस से लदा था समुद्र में फेंक दिया । जब गेहूं गया तब यात्रा का अभिप्राय गया पर मनुष्य अपने प्राण के बचाने के लिये कितना कुछ न करेगा ।

जब बिहान हुआ तब उन्हों ने देखा कि तीर के निकट पहुंचे हैं परन्तु उस देश को नहीं पहिचाना । आगे एक कोल था जिस का चौरस तीर था और आपस

में बिचार किया कि जो हो सके तो उसी पर नाव को टिकावें। तब उन्हों ने लंगरों को काटके समुद्र में छोड़ दिया और उसी समय पतवारों के बंधन खोल दिये और बयार के सन्मुख पाल चढ़ाके तीर की ओर चले। तब उन्हों ने नाव को भूमि पर दौड़ा दिया और गलही टक्कर खाके मिट्टी में फंस गई परन्तु पिछाड़ी लहरों की बरियाई से टूट गई।



पावल का समुद्र से बचना।

इतने में योद्धाओं का यह परामर्श था कि सब बंधुओं को मार डालें ऐसा न हो कि कोई पैरके निकल भागे परन्तु शतपति ने पावल को बचाने की इच्छा से उन्हें

उन को मनोरथ से रोका। उस ने यह आज्ञा दिई कि जो पैर सकते हैं पहिले वे कूदके तीर पर निकल जावें और जो पैर न सकें कोई पटरों को पकड़के कोई अपने को जहाज की बस्तुओं पर संभालके निकल जायें। संभव है कि पावल पैर सकता था क्योंकि दूसरे समय का वर्णन है कि जिस में वह एक दिन रात लों समुद्र में रहा। जो हो सो हो पर सब कोई तीर पर बच निकले जैसा पावल ने कहा था एक भी नाश न हुआ। तो वे लोग ऐसा बड़ा बचाव पाके कैसे आह्लादित हुए होंगे चाहिये कि वे परमेश्वर का बहुत धन्यवाद करते।

हम लोगों में से बहुत हैं जो कभी समुद्र पर यात्रा नहीं करते न समुद्र की बड़ी आंधियों को देखते पर और प्रकार की आंधियां हैं जो हम सभों पर आया करती हैं। हमारा जीवन एक जलयात्रा की नाईं है और नाना प्रकार के दुःख और आपदा बयार के समान चलती हैं। यौवन अवस्था में चाहे हमारा समुद्र सब सुन्दर और मृदु और धूप सहित और लहर रहित होवे पर किसी न किसी समय में दुःख की आंधी आही जायेगी। उचित है कि प्रभु यीशु पर मुक्ति का भरोसा करके मानो उस को मित्र के लिये संग लिये जायें। और यदि हम ऐसा करें तो वह हमें इस दुःखसागर की लहरों से बचाके अनन्तजीवन देश में पार ले जायेगा।

पावल का मलिता में प्रवेश करना।

जब पावल और उस के संगी समुद्र से बच निकले तब जान गये कि यह भूमि मलिता नाम एक टापू है। यह इतालिया देश की दक्खिन ओर एक छोटा सा टापू

है जो इंगलिस्तान के राज्य में है और आजकल उस स्थान को जहां उस का जहाज टूटा सो पावल प्रधान का कोल कहावता है।

यूनानी और रोमी लोग इस टापू के निवासियों को जंगली बताते थे चाहे हम उन को अज्ञान और बनैला समझें तौभी उन्हों ने जहाज के बेचारे लोगों का बड़ा सत्कार किया क्योंकि उन को लहरों से भीगे हुए देख और मेंह के कारण जो पड़ता था और जाड़े के कारण जो इन्हें अति सताता था उन्हों ने पावल और उस के संगियों के लिये आग सुलगाके उन्हें ग्रहण किया।



पावल का सांप से बचना।

जब और लोग आग के पास खड़े हो ताप रहे थे

तब पावल लकड़ियां बटोरने को गया। परन्तु जब वह उन्हें बटोर चुका तब उस ने इन लकड़ियों को आग पर रख दिया तब एक नाग आंच पाके निकला और उस के हाथ पर लिपट गया। जब उन जंगलियों ने सांप को उस के हाथ से लटकते देखा तब आपस में कहा निश्चय यह मनुष्य हत्यारा है जिसे यद्यपि समुद्र से बच गया तौभी न्यायकर्त्ता जीता रहने नहीं देता है।

उन्हों ने देखा कि पावल ने नाग को आग में झटक दिया पर यह भी ताकते रहे कि वह सूज जायेगा अथवा अचांचक मरके गिर पड़ेगा। पर जब वे बहुत बेर लों देखते रहे और उस का कुछ न बिगड़ा तब उन के मनों में दूसरी समझ आई और वे कहने लगे कि यह तो देवता है।

उस स्थान के निकट पुबलिउस नाम उस टापू के प्रधान की भूमि थी। उस ने उन्हें ग्रहण करके तीन दिन लों बड़े आदर से उन की पहुनई किई। और ऐसा हुआ कि पुबलिउस का पिता ज्वर और आंवलोहू से रोगी पड़ा था। जब पावल ने जाना तब उस के पास घर में जाके प्रार्थना किई और उस पर हाथ रखके उसे चंगा किया। जब लोगों ने यह सुना तब और बहुत से उस टापू के रोगी लोग आये और चंगे हुए। और पावल ने उन को उस बड़े वैद्य अर्थात प्रभु यीशु का नाम सुनाया होगा जो पाप के रोग को जो समस्त और रोगों से प्राणनाशक है चंगा कर सकता हां उन सब को जो उस से बिन्ती करते चंगा करता है।

टापूवाले उस सुख के कारण से जो पावल के हाथ से पाया था अति आनन्दित और कृतज्ञ थे और उस का

और उस के साथियों का उन्हों ने बड़ा सन्मान किया और जब वे चलने लगे तब जिन वस्तुओं का उन्हें प्रयोजन था सो लाद दिईं। यों तीन मास लों मलिता में रहकर जब जाड़े के दिनों के बीत जाने से आंधियां कम हुईं तब सिकन्दरिया की एक नाव पर जो उस टापू में जाड़े भर रही थी चल निकले।

रोम की ओर पावल की यात्रा।

पहिले जहाज सिसिली टापू को चलकर सुराकूस नगर में तीन दिन रहा तब थोड़ा आगे बढ़के वह इतालिया देश के पुत्युलै नगर में पहुंचा। यह रोम का विशेष कोल था और अन्न के जहाज प्रायः वहां भार उतारते थे। शतपति की कृपा से पावल सात दिन लों उस नगर के मसीहियों के संग रहा तब रोम की ओर सिधारा।

पुत्युलै से रोम लों एक पक्की सड़क बनी थी जो सड़कों की महारानी नाम से प्रसिद्ध थी और जिस के ऊपर दस दस कोस पर यात्रियों के लिये धर्म्मशाले और बिश्रामस्थान बने थे।

जब कि रोम नगर के शिष्य लोगों ने सुना कि हमारा प्रिय पावल पुत्युलै में आन पहुंचा है तब उन में से कई एक उसे मिलने को आये। उन में से बहुतों ने उसे दूर दूर देशों में देखा और उस के मुख से सुसमाचार सुना था। जब वह कुरिन्तस नगर में था तब वहां से एक लम्बी पत्री रोम के बिश्वासियों के पास भेजी थी। फिर इस समय अकूला और उस की पत्नी

प्रिसकिला वहां रहते थे और कुछ आश्चर्य्य नहीं कि वे भी उन में हुए होंगे जो पावल के मिलने के लिये चले। कोई कोई उसे अप्पियचैाक में जो रोम से बीस कोस दूर और कोई कोई तीनसराय में जो पन्द्रह कोस दूर है आ मिले और पावल ने जो मार्ग के दुःखों के मारे अति थकित और उदास था उन भाइयों के देखने से ईश्वर का धन्यबाद किया और ढाढ़स बांधा।



रोम नगर।

उन दिनों में रोम नगर सकल जगत का सब से बड़ा और बलवान और विख्यात नगर था और बहुत दिनों से उसे देखने की बड़ी इच्छा पावल को हुई थी और उस ने वहां के शिष्य लोगों को यह लिख भी दिया था कि जब ही हो सके मैं तुम्हारे पास आने चाहता हूं परन्तु जैसा चाहा था तैसा उस का जाना अब न हुआ।

उस ने चाहा कि शिक्षक होके मैं जहां चाहूं तहां जाऊं और सुसमाचार का प्रचार करूं। परन्तु अब मसीह के नाम के लिये जंजीर बंधे हुए आया था कि कैसर के आगे उस का बिचार किया जाये । उस बिचार का अन्त वह यह नहीं जानता था कि मैं छोड़ दिया जाऊंगा अथवा मार डाला जाऊंगा ।

जब शतपति रोम में पहुंचा तब उस ने बंधुओं को सेनापति के हाथ सौंप दिया परन्तु पावल को एक योद्धा के संग जो उस की रक्षा करता था अकेला रहने की आज्ञा हुई । सेनापति ने पावल पर दया दिखाई यहां लों कि वह उस योद्धा के संग जिस के साथ जकड़ा रहता अपने भाड़े के घर में रहा और उस के मित्र भी उस के घर में आया जाया करते थे ।

यद्यपि पावल बेचारा बंधुआ था तथापि ईश्वर का दूत भी होके रोम में गया था । उस नगर में जो देवी देवताओं और मूर्त्तों से भरा हुआ था वह ईश्वर से एक सन्देश लाता था। उस धर्म्म से जिस का प्रचार वह करता था उन मूर्त्तों पर बड़ा बिनाश आनेवाला था हां वह दिन आता था कि जिन में उन देवताओं के मन्दिर मसीही गिर्जाघर बन जायेंगे । पावल तो अकेला और बलहीन था और लोग प्रायः उस को तुच्छ जानते थे तौभी लिखा है कि ईश्वर ने जगत के दुर्बलों को चुना है कि शक्तिमानों को लज्जित करे ।

पावल का रोम में रहना ।

रोम में पहुंचने के तीन दिन पीछे पावल ने यिहूदियों के प्रधानों को एकट्ठे बुलाया । उस ने यह बिचार किया

कि यदि उन्हों ने यिरूशलीम के यिहूदियों से सुना कि मैं बड़ा अपराधी और लोगों का बिगाड़नेवाला हूं तो उन को इस द्वेष का कारण प्रगट करना चाहिये । जब वे उस के घर पर एकट्ठे हुए वह बोला कि मैं ने जंजीरों में बांधे जाने के योग्य कुछ भी नहीं किया परन्तु इतनी बात है कि मैं प्रभु यीशु का समाचार देता हूं कि वही पापियों का निस्तारक है ।

यिहूदी उस से बोले हम ने आप के विषय में कोई बुरी बात नहीं सुनी परन्तु हम सुनना चाहते हैं कि आप का क्या मत है क्योंकि हम ने सुना है कि सब लोग इस पन्थ के विरुद्ध बोलते हैं ।



रोम में उपदेश ।

तब पावल ने उन के लिये एक दिन ठहराया जिस में फिर आके इस बात के विषय बातचीत करें । जब बहुत लोग आये तब पावल भोर से सांझ लों उन से

चर्चा करता रहा उस ने व्यवस्था और विशेष करके भविष्यद्वक्ताओं से मसीह की कथा सुनाई। उस ने उन्हें कहा कि यशैयाह ने बताया था कि मसीह ऐसा होगा जैसा वह भेड़ी का बच्चा जो बलिदान किया जाता है और कि दाऊद ने कहा था कि उस के हाथ पांव छेदे जायेंगे और बहुत से ऐसे प्रमाण देते थे कि योशु वह मुक्तिदाता है जिस की हमारे पुरखे लोग बाट जोहते थे।

सुन्नेवालों में से कितनों ने इन बातों को मान लिया और कितनों ने बिश्वास नहीं किया। उन के बिदा होने से पहिले पावल ने उन से कहा कि ईश्वर की मुक्ति अन्यजातियों के पास भेजी गई है और वे सुनेंगे। यह सुन यिहूदी लोग आपस में इन बातों के विषय बिवाद करते हुए अपने अपने घर को चले गये।

योंहीं पावल पूरे दो बरस अपने भाड़े के घर में रहा और सभों को जो उस के पास आते थे ग्रहण करता था और बिना रोक टोक बड़े साहस से ईश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु योशु के विषय की बातें सिखाता रहा। यहां लों पावल का बृत्तान्त ब्योरावार प्रेरितों की क्रिया की पुस्तक में पाया जाता है पर यहां से केवल थोड़ा सा वर्णन मिलता है।

पावल की लिखी हुईं कई एक पत्रियां जो सुसमाचार की पोथी में मिलती हैं सो इस समय जब वह रोम नगर में रहता था लिखी गईं। और उस समय कई हितकारी मित्र अर्थात लूका तिमोथिय और योहन मर्कुस उस को बड़ा दिलासा देते थे। फिर उनीसिमुस नाम एक मनुष्य से पावल को बहुत सुख प्राप्त हुआ। यह पहिले फिलीमोन नाम कुलस्सी नगर के एक महाजन का दास हुआ था

परन्तु स्वामी को छोड़ और उस की कुछ सम्पत्ति ले रोम को भाग गया था। वहां दास ने पावल के मुख से मसीह की कथा सुनी और अपने पापों से पश्चात्ताप कर सच्चा शिष्य हो गया। वह ज्ञानी जन था और पावल ने चाहा कि वह रोम में रहकर काम में सहायता दे परन्तु बिचार किया कि बिना स्वामी की आज्ञा के दास का रोक रखना अच्छी बात नहीं है सो उस को यह शिक्षा दिई कि स्वामी पास लौट उस से फिर मेल करो पर ऐसा न हो कि स्वामी दास की बात को न माने पावल ने फिलीमोन को एक चिट्ठी भेजी और उस की यह

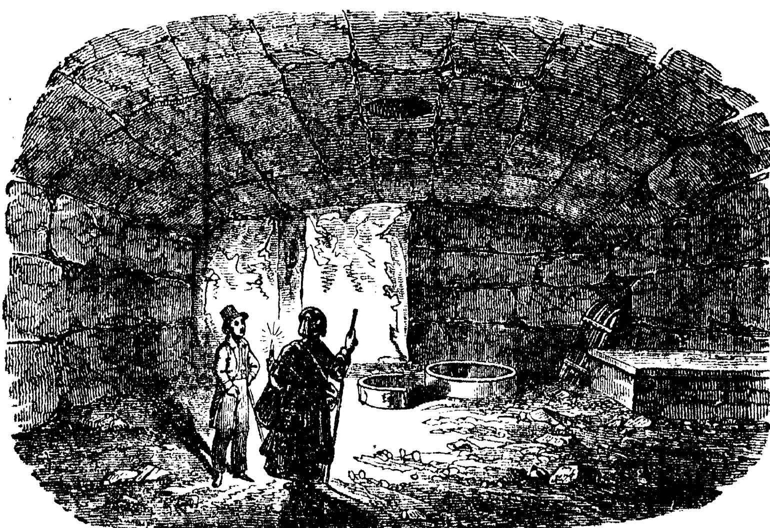


पावल का तिमोथिय को पत्री लिखना।

बिन्ती किई कि उनीसिमुस को क्षमा कीजिये हां आप उस को मेरा अन्तःकरण सा जानके ग्रहण कीजिये। इस सुन्दर पत्री को सुसमाचार पुस्तक में पढ़ लीजिये।

इस बृत्तान्त में हम देखते हैं कि जिस समय एक योद्धा रात औ दिन पावल पर पहरा देता था और जिस समय अपने देश से दूर हो वह शत्रुओं से घिरा था और नहीं जानता था कि वे कब मुझ को जीत लेंगे उस समय भी वह मुक्ति के सन्देश देने से हाथ नहीं उठाता था। चाहिये कि हम सदाकाल दुःख में भी और सुख में भी और लोगों की भलाई की चिन्ता किया करें और जितना अधिक हम मुक्तिदाता को प्यार करते हैं उतना अधिक हमारी यह इच्छा होगी कि और लोग भी उस से निस्तार पावें।

पावल के पिछले दिनों का बृत्तान्त।



पावल का बन्दीगृह।

रोम में दो बरस लों बंधुआई में रहकर पावल पीछे को निरपराध ठहराया गया और छूट गया। जब रोम से बिदा हुआ तब उन नगरों में फिर गया जिन

में अगले दिनों में सुसमाचार सुनाया था । हिस्पानिया देश में जाने चाहता था और इस बीच में वहां गया होगा । तीतुस को एक पत्री में यह लिख दिया था कि मकदूनिया देश में मैं एक जाड़ा काटने चाहता हूं पर ऐसा देख पड़ता है कि उस जाड़े के दिनों में शत्रुओं ने उस पर नया दोष्कलपन लगाया और वह फिर पकड़ा गया और रोम को भेजा गया कि दोबारा जांच लिया जाये ।



नीरो महाराज ।

परन्तु इस बीच में रोम नगर की और ही दशा हो गई । आधा नगर आग से भस्म हो गया । लोग यह सोचते थे कि हमारे दुष्ट और कठोर महाराजा नीरो ने अपने सेवकों के द्वारा नगर के बहुत स्थानों में इस इच्छा से आग लगवाई कि नगर को अधिक सुन्दर फिर बनाये । पर इतनी हानि हुई और इतने लोग जलकर नष्ट हुए कि महाराजा के विरुद्ध बड़ा हुल्लड़ उठा सो अपने को बचाने के लिये उस ने इस का दोष मसीहियों पर लगाया क्योंकि वे उस समय अधिक हो गये थे । नीरो ने यह बहाना किया कि ये लोग संसार के दुष्ट हैं और उन्हें संसार से मिटाना चाहिये । उस की आज्ञा से बहुत

से निरपराध मसीही काठ के क्रूस पर चढ़ाये गये बहुत से और बनपशु की खालों से ओढ़े हुए थे जिस्तें कुत्ते उन्हें फाड़ डालें और बहुत से ऐसे कपड़ों से लपेटे हुए थे जिस में राल लगाई गई थी और यों महाराजा की फुलवारी में खंभों पर बांधे जा और उन में आग लगा वह उन्हें मानो जीता डामर को जला देता था जिस्तें फुलवारी को प्रकाश देवें ।

पावल की यह दूसरी बंधुआई पहिली से कड़ी थी । इस से अधिक उस के मित्र पास न रहे । केवल लूका उस समय निकट था । जब वह उस लोहूलुहान घातक नीरो के आगे खड़ा हुआ जिस ने अपनी माता को घात किया था तब कोई पावल का संगी न रहा । सत्य है कि उन बुरे दिनों में किसी मसीही की सहायता करनी अति जोखिम की बात थी परन्तु पावल की यह साक्षी है कि उस समय प्रभु यीशु मसीह मेरे पास खड़ा हुआ और उस ने मुझे सामर्थ्य दिई ।

जब उस का विवेचना हो रहा तब पावल ने तिमोथिय को जो उस समय इफिसुस की मंडली में उपदेशक था दूसरी पत्री लिख भेजी । तिमोथिय मानो पावल का प्यारा पुत्र था और इस पत्र में बहुत सी ज्ञान और प्रेम की शिक्षायें उस को दिई गईं । विशेष करके उस ने उसे चिताया कि तू अपने तईं ईश्वर के ग्रहण योग्य प्रगट कर और ऐसा कार्य्यकारी जो लज्जित न हो । तू यीशु मसीह के अच्छे योद्धा की नाईं दुःख सह क्योंकि जो हम उस के संग मुए तो उस के संग जीयेंगे भी जो हम धीरज धरे रहें तो उस के संग राज्य भी करेंगे । पर जवानी की अभिलाषाओं से बचा रह परन्तु

धर्म्म औ बिश्वास औ प्रेम और जो लोग शुद्ध मन से प्रभु की प्रार्थना करते हैं उन्हों के संग मिलाप की चेष्टा कर । सो हे मेरे पुत्र तू उस अनुग्रह से जो मसीह यीशु में है बलवन्त हो ।

उन दिनों में पावल यह बिचार करता था कि मसीह के नाम के लिये मैं शीघ्र मारा जाऊंगा परन्तु ऐसी मृत्यु का आनन्द और शान्ति से बाट जोहता था । उस ने तिमोथिय को यह लिख भेजा कि अब मेरा लोहू ढाला जाता है और मेरे बिदा होने का समय आ पहुंचा है । मैं अच्छी लड़ाई लड़ चुका हूं मैं ने अपनी दौड़ पूरी किई है मैं ने बिश्वास को पालन किया है । अब तो मेरे लिये वह धर्म्म का मुकुट धरा है जिसे प्रभु जो धर्म्मी बिचार-कर्त्ता है उस बड़े दिन मुझे देगा ।

पावल जान गया कि अब मेरी लड़ाई अंत लों पहुंची है और यद्यपि अधर्म्मी न्यायकरनेवाले भयंकर रीति से मुझे मारेंगे तथापि वह जो ऊपर के न्याय के सिंहासन पर बैठा है मुझे जीवनमुक्ति का मुकुट देगा और केवल मुझे नहीं पर उन सभों को भी जिन्हों ने मसीह को प्यार किया ।

पावल ने तिमोथिय से यह भी कहा कि मैं तुझे देखने को बड़ी अभिलाषा रखता हूं । तू उस लबादे को जो मैं त्रोआस में छोड़ आया जब तू आवे तब ले आ जिस्तें मैं जाड़े से और बन्दीगृह की सीलन से बचूं और मेरी पुस्तकों को और निज करके चर्म्मपत्रों को भी लेता आइयो ।

यह हम नहीं जानते कि पावल ने तिमोथिय को फिर देखा अथवा नहीं । जब वह सत्तर बरस का बृद्ध

था वह रोम नगर के फाटकों के बाहर प्रभु के दास होने के हेतु से मारा गया। उस के पिछले दिनों में लूका जो उस का प्यारा मित्र और वैद्य था उस के संग रहा होगा और उस को मरते समय दिलासा दिया होगा पर यह हम निश्चय जानते हैं कि जब ही कुल्हाड़ी उठाई गई कि उस के सिर को उड़ा देवे तब ही उस का प्रिय प्रभु उस के संग था और उस को इतना ढाढ़स देता था कि जै जैकार करके बोले कि हे मृत्यु तेरा डंक कहां। हे परलोक तेरी जय कहां। ईश्वर का धन्यबाद होय जो यीशु मसीह के द्वारा से हमें जैवन्त करता है।

उस समय से अब अठारह सौ बरस से अधिक बीत गये हैं और तब से पावल स्वर्गलोक में अपने प्रभु के अपार सुख में रहता है। तो सोचिये कि पावल के समान अपने जीवन का बिताना कैसा भला होता है। वह सदाकाल यह बिचार करता रहा कि मैं समस्त मनुष्यों की भलाई कैसे करूं। यह तो सुखबिलास भोगने से कहीं अच्छा और लाभदायक ठहरता है। हिन्दुस्तान में ऐसे लोगों का बहुत प्रयोजन है जो सभों को मुक्तिदाता का संदेश दें और उन के मनों को ईश्वर की ओर फिरावें जिस्तें गूंगी मूर्त्तों की सेवा छोड़ वे अपने जन्मदाता और अन्नदाता की सेवा टहल करें। काम तो अच्छा है क्या तुम भी करोगे।

धर्म्म का मुकुट हम को भी मिल सकता है परन्तु बिना यत्न के कभी न मिलेगा। एक दौड़ का हमें दौड़ना है और यदि उस में जीतें तो जीवनमुक्ति का सिद्धफल हमें दिया जायेगा। तो हर एक बोझ को और

उलझानेवाले पाप को दूर करके उस दौड़ को धीरज से और प्रभु की ओर ताकते हुए जो मुकुट का देनेवाला है दौड़ें। योंहीं अवश्य जीतेंगे और स्वर्गबासियों में गिने जायेंगे।

समाप्त।

PRINTED AT THE ALLAHABAD MISSION PRESS.

1892.